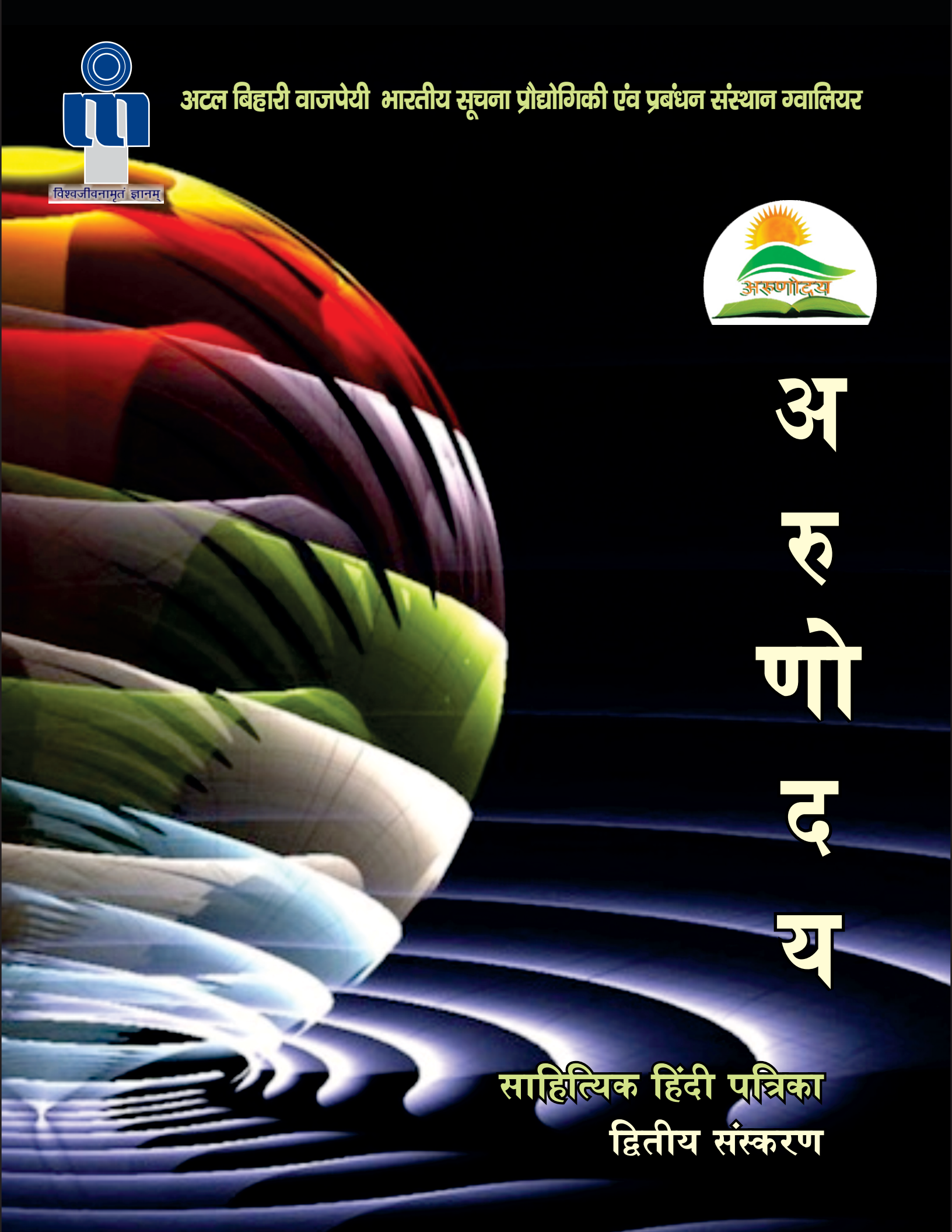

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान ग्वालियर

विश्वजीवनामृतं ज्ञानम्

अरुणोदय

साहित्यिक हिंदी पत्रिका

द्वितीय संस्करण

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एंव प्रबंधन संस्थान ग्वालियर

एक परिचय

भारतीय सूचना प्रोद्यौगिकी एवं प्रबंधन संस्थान ग्वालियर, एक स्वाशासी संस्थान है, जो मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 1997 में स्थापित किया गया, सबसे पहला आई. आई. आई. टी. एम. है जिसकी स्थापना भारत में सूचना प्रोद्यौगिकी एवं प्रबंधन शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए की गयी थी। आई. आई. आई. टी. एम. ग्वालियर भारत में सूचना प्रोद्यौगिकी एवं प्रबंधन के क्षेत्र में शिक्षा प्रदान करने वाला एक अग्रणी संस्थान है। आई. आई. आई. टी. एम. अपनी तरह का एक अनूठा संस्थान है जो बेहतर गुणवत्ता की उच्च शिक्षा और प्रासंगिक कौशल प्रदान करने में सबसे प्रमुख है। यह ग्वालियर शहर में स्थित है जो मध्य प्रदेश राज्य के उत्तरी भाग में है।

1992 में मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय ने डॉ. पी जी रेड्डी की अध्यक्षता में एक उच्च स्तरीय समिति की स्थापना की। इस समिति ने सॉफ्टवेयर शिक्षा और प्रशिक्षण के संबंध में देश में समग्र परिद्रश्य की समीक्षा की। आई. आई. टी. और आई. आई. एम. को मिसाल मानकर देश में नए उन्नत सूचना प्रणाली संस्थानों की स्थापना की सिफारिश की गयी और आगे की कार्यवाही के बाद 1997 में आई. आई. आई. टी. एम. स्थापित किया गया।

पहले पांच साल के लिए 61 करोड़ रूपये के वित्तीय परिव्यय के साथ स्थापित किया गया यह संस्थान आईटी और प्रबंधन के क्षेत्र में एक प्रमुख संस्थान के रूप में कार्य करता है। इन वर्षो में तकनीकी एवं कार्यात्मक भूमिका को बड़ी ही कुशलता से निभाया है। संस्थान को 2001 में डीम्ड यूनिवर्विटी का दर्जा प्रदान किया गया था। संस्थान परिसर, ग्वालियर किले की तलहटी में सुरम्य परिद्रश्य के बीच में 160 एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है। छात्रों के चहुँमुखी विकास के लिए आवश्यक सभी अत्याधुनिक सुविधायें उपलब्ध करने में संस्थान आत्मनिहीत है।

संस्थान ने अमेरिका, फ्रांस और जापान में विभिन्न विश्वविद्यालयों के साथ अनुसंधान सहयोग स्थापित किया है। संस्थान ने विभिन्न अनुसंधान प्रयोगशालाओं और उद्योगों के साथ औद्योगिकी सबंध विकसित किये है विभिन्न राष्ट्रीय अंतराष्ट्रीय सम्मेलनों और प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में संस्थान के छात्रों एवं शिक्षकगणों के शोध कार्य प्रकाशित किये जा चुके है।

आई. आई. आई. टी. एम. ग्वालियर को एक आई.एस.ओ. 9001–2008 प्रमाण पत्र मिला है। हाल ही में आउटलुक द्वारा भारत के शीर्ष 50 व्यावसायिक संस्थाओं पर किये गये एक सर्वेक्षण में संस्थान को 25 वें स्थान पर रखा गया है।

संस्थान के छात्र इंटेल, माइक्रोसॉफ्ट, आई. बी. एम., डाइरेक्ट आई, टी. सी. एस., विप्रो, एमडॉक्स जैसी प्रतिष्ठित कंपनियों में कार्यरत हैं। परिसर के भीतर छात्र का जीवन एवं गतिविधियाँ एक चुनौतीपूर्ण और रचनात्मक वातावरण प्रदान करती है जो स्वतंत्र सोच एवं समग्र दृष्टिकोण विकसित करने में छात्र की मदद करती है। छात्रों के चहुँमुखी विकास के लिए विभिन्न सांस्कृतिक और खेल से संबंधित कार्यक्रम वर्ष भर आयोजित किये जाते हैं।

अरुणोदय

विषय क्रम	पृष्ठ क्रमांक
संदेश	3
सम्पादकीय	5
समन्वयकों की ओर से....	6
छात्र संपादक	7
श्रीरामचरित मानस	8
पठान बाबा	10
हिन्दी पखवाड़े का इतिहास	12
आइयें बाबा बनें	13
दार्जिलिंग की यात्रा	13
कहानी मिडल क्लास की	15
मनुष्य के विकास से पुस्तकालय का सम्बन्ध	17
सत्यमेव जयते ...	18
कन्या भ्रूण हत्याः एक अभिशाप	19
कोचिंग संस्थानों के अनुभव	20
ईदगाह– साहित्यिक विवेचना	20
बेटियाँ...	21
संस्मरण	22
अधूरे सपने	22
मिट्टी का तेल	24
सिंह “एक पहचान”	24
परिस्थितियाँ	26
मानवता की हत्या	26
माथे की बिंदी है हिन्दी	28
जिन्दगी	28
कभी–कभी	29
उलझने..	29
नाविक धीरे धीरे जाना	29
एक फूल की चाह	30
अनुभव..	34
परमसाथी	34
क्यूँ ना लिखू	34
अखण्डता	35
अभी हुआ वतन आजाद नहीं	35
गजल	36
लोग क्या कहेंगे	36
अजनबी	36
माँ	37
दोस्ती	37
निवेदन..	38
ख्वाहिश	39
आधुनिक परिवेश में हिन्दी	39
कम्प्यूटर	39
विदाई	40
इतिहास की परीक्षा	40
कहाँ हूँ मैं	41
सरल, मधुर मेरी रचना	41
स्वप्न	42
आवाहन	42
ईश्वर से, मैं हूँ खफा	43
मेरा दीवानापन	44
कोई और आयेगा	44
क्यूँ भला चुप है	45
छोटी सी जिन्दगी है	45
मेरा दोस्त	45
वक्त	46
माँ	46
दास्तान–ए–मुस्तफा	47
परिवर्तित	47
जागरण	47
दूधिया हाथ में	48

अटल बिहारी वाजपेयी भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एवं प्रबंधन संस्थान ग्वालियर

मुरैना लिंक रोड़, ग्वालियर 474015 (मध्यप्रदेश) भारत

संदेश

प्रो. एस.जी. देशमुख
निदेशक

मुझे अत्यधिक प्रसन्नता है कि हमारे संस्थान में हिन्दी पत्रिका अरूणोदय का प्रकाशन हो रहा है। विद्यार्थी, शिक्षकगण तथा कर्मचारीगणों के सतत् प्रयासों के फलस्वरूप हमारे संस्थान को इंदिरा गाँधी पुरूस्कार, महामहिम राष्ट्रपति प्रणव मुखर्जी के कर कमलों से मिला। अरूणोदय हिन्दी भाषा के प्रति विद्यार्थियों को सजग करने का एक माध्यम है, एंव इस आधुनिक काल में हिंदी को, हमारी संस्कृति तथा गौरवशाली परम्परा को जीवित रखने का एक प्रयास है।

"अरूणोदय" हमारे विद्यार्थियों, कर्मचारी एंव शिक्षकगणों की प्रतिभा का स्वरूप है और हमें इसे निरंतर रूप में सक्रिय रखना है। हिंदी हमारी मातृभाषा एवं कर्मभाषा है।

"अरूणोदय" के द्वारा हम यह संकल्प लें कि हिन्दी का प्रचार एवं प्रसार कायम रहे।

प्रो. एस.जी. देशमुख
निदेशक

संदेश

मैं अत्यधिक प्रसन्न हूँ कि हमारा संस्थान हिन्दी भाषा में अपनी जीवनचर्या से कुछ समय निकालकर, अपने समाज और संस्कृति के विकास के लिए प्रयासरत है। अपने विचारों और भावों को व्यक्त करने के लिए मातृभाषा हिंदी का प्रयोग एक बेहतर विकल्प है जिसका प्रयोग किया जाना चाहिए। अपने देश के विकास और संस्कृति की रक्षा के लिए राष्ट्रभाषा हिंदी को संरक्षित किया जाना परमावश्यक है। हिन्दी को अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में ख्याति दिलाने के लिए हो रहे प्रयासों को ध्यान में रखते हुएं छात्रों द्वारा किया गया यह प्रयास अत्यंत प्रशंसनीय है, क्योंकि जब हम सब मिलकर इसके लिए प्रयास करेंगे तब इस लक्ष्य को पाना संभव है। मैं आशा करता हूँ कि "अरूणोदय" का प्रकाशन आपकी प्रतिभा एंव ज्ञान को आभा प्रदान करेगा।

श्री संजय भटनागर
कुलसचिव

सम्पादकीय

हिन्दी पत्रिका अरूणोदय के द्वितीय संस्करण के प्रकाशन पर मैं अपने उन सभी पाठकों एवं लेखकों को साधुवाद देता हूँ जिनका अत्यन्त स्नेह हमें प्राप्त होता रहा है। इस संस्करण मे आपके पूर्व में भेजे हुए सुझावों को अनुसरण करने का प्रयास हमनें किया है। हमे आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि यह संस्करण आपको लेखन की नई विधाओं से परिचित करायेगा एवं आपको कुछ नया लिखने को प्रेरित करेगा।

हमारा हिन्दी के प्रति अपार स्नेह एवं इसके प्रचार एवं प्रसार मे किया गया प्रयास, 14 सितम्बर 2014 को भारत के राष्ट्रपति माननीय श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा इंदिरा गांधी राजभाषा पुरस्कार देकर सराहा गया। इस उपलब्धि को पाने में आप सभी का योगदान सराहनीय रहा हैं एवं हम ऐसे ही अन्य उपलब्धियां आपके सहयोग एवं स्नेह से प्राप्त कर आपके मध्य प्रस्तुत होते रहेगें।

आप सभी से एक बार पुन: निवेदन आपके सहयोग आपका स्नेह आपका आशीर्वाद।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
सम्पादक

समन्वयकों की ओर से....

यह जानकर मुझे काफी प्रसन्नता हुई कि हमारे संस्थान के छात्र–छात्राओं ने हिन्दी पत्रिका अरूणोदय के प्रकाशन में लग्न के साथ कार्य किया और उनकी इस मेहनत के फलस्वरूप हम आज सफलतापूर्वक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन कर पाए है। यह पत्रिका न केवल पाठको की अच्छी रचनाएं प्रदान करेगी बल्कि लेखकों को अपनी कला का प्रमाण देने में भी सहायक सिद्ध होगी।

संस्थान द्वारा अरूणोदय का प्रकाशन हिंदी भाषा के प्रति आस्था का प्रतीक है। यह प्रत्रिका का द्वितीय संस्करण है। आशा करते हैं कि यह संस्करण भी प्रथम संस्करण की भांति उपयोगी सिद्ध होगा। इसी संकल्प के साथ हिन्दी पत्रिका अरूणोदय का द्वितीय संस्करण आपके सम्मुख है।

डॉ. मनोज पटवर्धन

आज की शिक्षित युवा पीढ़ी अंग्रेजी में बात करने में गौरान्वित महसूस करती है। हमारी सरकार एवं हमारे देश के नागरिकों को हिन्दी को उचित स्थान दिलाने में अहम भूमिका का निर्वाह करना है। दुनिया के हर राष्ट्र की अपनी भाषा है और वहाँ लोग अपनी भाषा में ही लेखन तथा वार्तालाप करते हैं। वर्तमान युग में हिन्दी का प्रयोग हमारे दैनिक कार्यकलापो में दिन प्रतिदिन कम होता जा रहा है। आज हिन्दी को वह गौरव वापस दिलवाने की अति आवश्यकता है, जो उसका अधिकार है।

अरूणोदय उसी लक्ष्य को प्राप्ति की ओर एक सार्थक कदम है। मैं बड़ी खुशी के साथ अरूणोदय का स्वागत करता हूँ।

डॉ. अजय कुमार

छात्र संपादक

किसी भी पत्रिका के सम्पादन की सार्थकता तब ही होती है जब वह अपने उद्देश्य की कसौटी पर खरी उतरे। हिन्दी भाषा के बीज–अंकुरण, उनके पुष्प–पल्लावागमन, परिपक्वता के उद्देश्य को लिए हुए ये पत्रिका भारतीय हिन्दी साहित्य को जन साहित्य बनाने के लिए व्याकुल है।

"हिंदी है हम वतन है हिन्दोस्तान हमारा" की भावानाभिव्यक्ति, और भूतपूर्व साहित्यकारों के योगदान के महत्व के प्रकाश पुंज को लेकर ये पत्रिका आज वर्तमान युवा वैज्ञानिकों और अभियान्त्रिकी विद्यार्थियों में हिंदी चेतना के लिए उद्यीयेमान होने जा रही है।

अरूणोदय अर्थात् ज्ञान का उदय अर्थात् अज्ञान रूपी अन्धकार का विनाश। पत्रिका के सम्पादक की भूमिका को अदा करने में मैं अपने आप को बहुत सौभाग्यशाली समझता हूँ। पत्रिका की सफलता सभी के पारस्परिक सहयोग का निष्कर्ष होती है। हिंदी समीति के अध्यक्ष को मैं विशेष रूप से धन्यवाद देते हुए उनका आभार व्यक्त करता हूँ कि उन्होनें मुझे इस योग्य समझा। समुद्र के समान गंभीरता, गरूड के समान परख मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त करना चाहूँगा।

अपने सम्पादक सहयोगी अर्पण जैन को उनके सहयोग के लिए धन्यवाद देना चाहूँगा। अंततः आपकी शुभ कामनाओं की छत्र–छाया में इस पत्रिका के सफल होने की कामना करता हूँ।

अमनदीप सिंह
अर्पण जैन

श्रीरामचरित मानस

गोस्वामी श्री तुलसीदास जी द्वारा रचित श्री रामचरित मानस एक अद्‌भुत धर्म ग्रंन्थ है। इतना सुन्दर उत्तम काव्य के लक्षणों से युक्त साहित्य एंव सभी रसों का आस्वादन कराने वाला कोई अन्य ग्रंन्थ आज तक मेरे ज्ञान में नहीं आया। इस ग्रंन्थ में आदर्श राजधर्म, आदर्श मित्र तथा आदर्श स्वामी सेवक धर्म का दर्शन होता है कदाचित इसी कारण समाज के सभी वर्ग के धार्मिक जन बड़े चाव से इस ग्रंन्थ को पढ़ते है एवं इसका श्रवण करते है। सच्चे अर्थ में यह एक अलौकिक आशीर्वादात्मक ग्रंन्थ है जिसके श्रवण मात्र से ही लौकिक एवं पारमार्थिक अनेकों कार्य सिद्ध होते है।

ऐसे अद्‌भुत ग्रंन्थ के लेखन का शुभारम्भ गोस्वामी जी द्वारा आज से 440 वर्ष पूर्व हुआ जैसा कि स्वंय रामचरित मानस में गोस्वामी जी ने रचित किया हैं।

स्वंत सोरह से एक तीसा।
करऊँ कथा हरि पदधरि सीसा॥
नौमी भौमवार मधुमासा।
अवधपुरी यह चरित प्रकासा॥
जेहि दिन राम जन्म श्रुति गावहिं।
तीरथ सकल तहाँ चलि आवहि॥

सम्वत् 1631 में तत्कालीन 'रामनवमी' के दिन लगभग वैसा ही योग था जैसा त्रेता युग में भगवान श्रीराम के जन्म के समय था। त्रेतायुग में जब श्रीराम का जन्म हुआ था तब चैत्रमास शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि मंगलवार का शुभ दिन था। वैसा ही शुभ दिन कलियुग में सम्वत्1631 (लगभग सन् 1574) में था। जिस अयोध्या नगरी में प्रभु राम का जन्म हुआ उसी नगरी में गोस्वामी जी ने रामनवमी के शुभ दिन पर मंगलवार को उक्त ग्रंन्थ का शुभ आरम्भ किया। ऐसा अद्‌भुत ग्रंन्थ, दो वर्ष सात माह छब्बीस दिन में पूर्ण हुआ। सम्वत् 1633 विक्रम के मार्गशीर्ष, शुक्ल पक्ष में राम विवाह के शुभ दिन सातों काण्ड पूर्ण हो गए।

इस अलौकिक ग्रंन्थ का नाम 'रामचरित मानस' स्वयं महादेव द्वारा ही रखा गया जैसा कि निम्न चौपाई से पता चलता है।

राचे महेश निज मानस रखा।
पाई सुसमय सिवा सन भाषा॥
तातें रामचरित मानस वर।
धरेड नाम हियँ टेरि हरषि हर॥

अर्थात् श्री महादेव जी ने इसकी रचना कर अपने मन में रखी और शुभ अवसर आने पर पार्वती जी से कहा। इसी कारण से शिवजी ने अपने हृदय से प्रसन्न होकर इसका सुन्दर 'रामचरित' नाम रखा। श्री शिवजी की कृपा से ही गोस्वामी जी श्री रामचरित मानस के कवि हुए यथा–

संभु प्रसाद सुमति हिय तुलसी।
रामचरित मानस कवि तुलसी॥

राम कथा का प्रारम्भ दो श्रेष्ठ मुनियों के सुन्दर संवाद से हुआ है। जिनमें एक मुनि भारद्वाज है जो प्रयाग में बसते हैं तथा उनका श्रीरामजी के चरणों में अत्यन्त प्रेम है। वहीं प्रयाग में ही उनका परम रमणीय और मन को भाने वाला बहुत ही पवित्र आश्रम है। तीर्थराज प्रयाग में जो ऋषि–मुनि स्नान करने जाते है उनका समाज वहाँ भारद्वाज मुनि के सुन्दर आश्रम में एकत्रित होता है और फिर वहाँ भगवान के गुणों की कथाएँ कहते व सुनते है। इस प्रकार पूरे माघ मास स्नान, ध्यान, सतंसंग तथा ज्ञान–वैराग्य से युक्त भगवान की दुर्लभ भक्ति का निरूपशा करके सभी विद्वजन अपने–अपने आश्रम को चलें जाते है। एक बार पूरे मकर भर स्नान–ध्यान व सतंसंग कर सब मुनीश्वर अपने–अपने आश्रमों को लौट गयें। उनमें से एक परम ज्ञानी मुनि को चरण पकड़कर भारद्वाज मुनि ने रोक लिया। आदर पूर्वक उनके चरण कमल धोकर पवित्र आसन पर बैठाया पूजा करके उनके सुयश का वर्णन कर अति कोमल वाणी से बोले –

नाथ एक संसड बड़ मोरे।
करगत वेदतत्व सबु तौरे॥
कहत सो मोहि लागत भय लाजा।
जौन कहउँ बड़ होइ अकाजा॥

अर्थात् भारद्वाज मुनि कह रहे हैं याज्ञवल्क्य मुनि से कि मेरे मन में एक बड़ा सन्देह है पर उसको कहते मुझे भय

और लज्जा आती है (भय इसलिए कि कहीं आप यह न समझें कि मेरी परीक्षा ले रहा है, लज्जा इसलिए कि इतनी आयु बीत गयी, अब तक ज्ञान नहीं हो पाया) और यदि नहीं कहता हूँ तो अज्ञानी बना रहता हूँ। हे प्रभु, संत लोग ऐसी नीति कहते है कि गुरू के साथ छिपान करने से हदय में निर्मल ज्ञान उत्पन्न नहीं होता। यही सोचकर मै अपना अज्ञान प्रकट कर रहा हूँ। हे नाथ मुझ सेवक पर कृपा करके मेरा अज्ञान दूर करिएगा। आगे कहते है कि

राम नाम कर अमित प्रभावा।
संत पुरान उपनिषद गावा।।

और यही नहीं, अविनाशी भगवान शम्भु निरन्तर राम नाम का जप करते रहते है ? एक राम तो अवध नरेश राजा दशरथ के पुत्र हैं जिनका चरित सारा संसार जानता है कि उन्होंने स्त्री के विरह में अपार दुःख उठाया और क्रोध आने पर युद्ध में रावण को मार डाला।

प्रभु सोई राम कि अपर कोड जाहि जपहिं त्रिपुरारि।
सत्यधाम सर्वग्य तुम्ह कहु विवेकु विचारि।।
जाग वलिक बोले मुसुकाई।
तुम्हि विदित रघुपति प्रभुताई।।
राम भगत तुम मन क्रम वानी।
चतुराई तुम्हारि मैं जानी।।
चाहत सुनै राम गुन गुढा।
कीन्हिहु प्रस्न मनहु अति मूढा।।
तात सुनहु सादर मनु लाई।
कहउँ राम के कथा सुहाई।।
रामकथा ससि किरन समाता।
संत चकोर करहिं जेहियाना।।

याज्ञवल्क्य जी भारद्वाज जी से कह रहे है कि ऐसा ही सन्देह पार्वतीजी ने भी किया था तब महादेवजी ने विस्तार से उसका उत्तर दिया था। अतः अब मै अपनी समझ अनुसार वही याज्ञवल्क्य शिव पार्वती संवाद कहता हूँ। तदुपरान्त मुनि ने बड़े ही रोचक ढंग से विस्तार पूर्वक सती के भ्रम व शिवजी द्वारा उनके त्याग की कथा भारद्वाज मुनि को सुनाई। इसके बाद सती का अपने पिता राजा दक्ष के यज्ञ में जाने की कथा, पति अपमान से दुःखी होकर आत्मदाह की कथा सुनाई इसके बाद पार्वती जी के जन्म व तपस्या व शिव-पार्वतीजी के विवाह की पूरी कथा विस्तार से वर्णन की है जिसमें काव्य के सभी रसों का आंनद भरा हुआ है जो कि श्रीरामचरित मानस ग्रंन्थ को अति रोचक, ज्ञानप्रद व शिक्षाप्रद बना देता है। याज्ञवल्क्य जी इस सबके बाद मुनि शिव-पार्वती संवाद का वर्णन करते है।

कथा जो सकल लोक हितकारी।
सोई पूछन चहु सैलकुमारी।।
जौ मो पर प्रसन्न सुखरासी।
जानिअ सत्य मोहि निज दासी।।
तो प्रभु हरहु मोर अग्याना।
हि रघुनाथ कथा विधि नाना।।
प्रभु जे मुनि परमारथ वादी।
कहहिं राम कहूँ ब्रहन अनादी।।
सेस सारदा वेद पुराना।
सकल करहि रघुपति गुन गाना।।
तुम्ह मुनि राम राम दिन राती।
सादर जपहु अनंग आराती।।
राम सो अवध नृपति सुत सोई।
की अन अगुन अलखगति कोई।।

ये राम वही अयोध्या नरेश के पुत्र है? या अजन्मा, निगुर्ण और अगोचर कोई और राम है ?

जौ नृप्तनय त ब्रहम किमि नारि विरहँ मति भोरि।
देखि चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि।।

पार्वती जी के प्रश्न को सुनकर महादेव जी अति प्रसन्न हुए और कहते है कि हे पार्वती मेरे विचार में तो श्रीरामजी की कृपा से तुम्हारे मन में शोक, मोह, संदेह और भ्रम लेश मात्र भी नहीं है और न हो सकता है। तदपि असंका (संशय) कीन्हिहु सोई। कहत सुनत सवकर हित होई।। इस प्रसंग के कहने सुनने से सबका कल्याण होगा। श्रीरामचन्द्र जी कथा सब सुखों को देने वाली है। महादेव आगे कहते है, सगुन और निगुर्ण में कुछ भी भेद नही है। जो निर्गुण, निराकार व अजन्मा है वही भक्तों के प्रेमवशं सगुण हो जाता है जो निगुर्ण है वही सगुर्ण कैसे है जैसे जल और ओले में भेद नहीं (दोनों जल ही है) ऐसे ही

निगुर्ण और सगुर्ण एक ही है।

आगे कहते है –

जेहि इमि गावहि वेद बुध जाहि धरहि मुनि ध्यान।
सोई दशरथ सुत भगत हित कोशलपति भगवान॥

जिस ब्रह्म का वेद वर्णन करते है और मुनि जिसका ध्यान धरते है वही दशरथनंदन, भक्तों के हितकारी अयोध्या के स्वामी भगवान श्रीरामचन्द्र जी है। हे सुमुखि रामनाम विष्णु सहस्त्र नाम के तुल्य है। मैं सर्वदा 'राम राम राम' इस प्रकार मनोरम राम नाम में ही रमण करता हूँ।

भगवान शिव की अमृतमयी वाणी सुनकर पार्वतीजी का सब संशय दूर हो गया। तदानुसार मुनि भारद्वाज जी का भी सभी संशय दूर हो गया। इस प्रकार श्रीरामचरित मानस अनेक अर्न्त कथाओं व प्रसंगों से भरा पड़ा है। सुन्दर काण्ड में कितना सुन्दर प्रसंग है। हनुमतलाल जी माता सीता की खोज कर लाते है तथा प्रभु रामचन्द्र जी को माता का पूरा हाल सुनाते है। भगवान कहने लगे हे हनुमान आपके समान मेरा उपकार करने वाला कोई नहीं है। प्रभु वार वार हनुमान जी को देख रहे है उनके नेत्रों में प्रेम के आँसूओं का जल भरा है और शरीर अति पुलकित है। तब हनुमान जी प्रेम में विकल होकर श्रीरामजी के चरणों में गिर पडे हैं प्रभु वार वार उनका उठाना चाहते है –

वार वार प्रभु चहइ उठाना।
प्रेम मगन तेहि उइव न माना॥

प्रभु के पंकज कपि के सीसा।
सुमिरि सो दसा मगन गौरीसा॥

कपि उठाइ प्रभु हृदयँ लगावा।
कर गहि परम निकट बैठावा॥

तब हनुमतलाल जी प्रभु से उनकी भक्ति का वर मँगते हैं तो उनकों प्रभु से प्राप्त होना है। इस प्रकार अनेकों दुर्लभ प्रसंगों से भरा है उक्त अद्‌भुत ग्रंन्थ जिसकों जितनी बार भी पढ़ा जाता है उतनी बार इस कों पढ़ने की व सुनने की इच्छा होती है।

अन्त में मैं यही कहूँगा कि श्री रघुनाथ जी का गुणगान सम्पूर्ण सुन्दर मंगलों का देने वाला है। जो भी आदर सहित सुनेगे वे बिना किसी जहाज (अन्य साधन) के ही भवसागर को तर जायेंगे।

एहिं कलिकाल न साधन दूजा।
जोग जग्य जप तप व्रत पूजा॥

रामहि सुमिरिअ गाइअ रामहि।
संतत सुनिअ राम गुन ग्रामहि॥

सकल सुमंगल दायक रघुनायक गुन गान।
सादर सुनहिं ते तरहिं भव सिंधु बिना जल जान॥

मै घोर अज्ञान के अंधकार में उत्पन्न हुआ था पर मेरे गुरू ने अपने ज्ञानरूपी प्रकाश से मेरा घोर अज्ञान का अंधकार दूरकर मेरी प्रभु के नाम–स्मरण व सत्संग में रूचि उत्पन्न की। मैं श्री गुरूदेव को सादर नमस्कार करता हूँ।

"जय श्री राम"

(उक्त लेख मेरी मौलिक कृति है जो श्रीरामचरित मानस ग्रंन्थ से आधारित है)

उमा शंकर अग्रवाल

पठान बाबा

यह आकस्मिक घटना तब घटी जब मैं ग्वालियर किले के सफर पर निकला था। इस किले ने कई राजाओं और महाराजाओं का उत्थान एवं पतन देखा है तथा जो भी शरण में आया उसे आश्रय प्रदान किया है। इसका विशाल प्रवेश द्वार जो स्थानीय लोगो में किला गेट के नाम से मशहूर है उस पुराने ग्वालियर शहर का हिस्सा जिसे संकरी गलियों, मिठाई तथा अगरबत्ती की महक से पहचाना जा सकता है। जैसे ही मैं किले के विशाल द्वार पर

पहुंचा, गायों एवं बकरियों ने मेरा स्वागत किया ओर फिर लम्बी ऊंची यात्रा शुरू हुई। यात्रा इसलिए कि यह काफी थका देने वाली चढ़ाई है। जिस पहाड़ी पर किला निर्मित है वह अनेक मंदिरों तथा गुफाओं से आच्छादित है।

पथरीले रास्ते पर चढ़ाई करते हुए मैं पुराने जमाने की यादों में खो गया। मेरा प्रत्येक कदम पहले से अधिक कष्टदायक था ओर मुझे किला देखने के निर्णय पर पुनः विचार करने के लिए बाध्य कर रहा था। उन पथरीली सीढ़ियों पर पर्यटक अपनी थकान मिटाते ओर प्यास बुझाते मिल जाते हैं। लगभग आधी चढ़ाई पूरी करने पर आठवीं शताब्दी में निर्मित चतुर्भुज मंदिर मिलता है।

मंदिर देख कर थोड़ी राहत मिलती है। राहत मंदिर के कारण मिलती है अथवा ऊपर मिलने वाली चीजो की कल्पना करके यह कोई नहीं जानता कि आगे चढ़ने पर एक दरवाजा ओर मिलता है। दरवाजे के बाद एक छोटा आडम्बरहीन फिरोजी रंग का मकबरा था। मकबरे के ठीक सामने एक छोटी गुफा है जो बंद है परन्तु उसमे निरंतर जल का प्रवाह जाता है। मकबरे में केवल एक ही कमरा था ओर उस पर एक मेहराब बनी हुई थी। कब्र के आसपास काफी सारे फूल ओर अगरबत्तियां थी। जैसे ही मैंने अपना कैमरा निकाला एक श्रद्धालु जिनका नाम नरेन्द्र कुमार सिकरवार था मेरे पास आये ओर मुझे मकबरे के बारे में बतलाने लगे। उन्होंने बताया कि मकबरा पठान बाबा का था। नीचे की ओर बहती नदी की तरह मेरे मुँह से पठान बाबा के बारे में कई प्रश्न निकले।

उस श्रद्धालु ने मुझे बतलाया कि पठान बाबा 200–300 वर्ष पहले रहते थे। वे एक चमत्कारी पुरूष थे तथा सभी की मनोकामना पूर्ण करते थे। उनसे मिलने सभी धर्म तथा जातिओं के लोग आते थे। आज भी उस इलाके के प्रभावशाली लोग किसी भी कार्य से पूर्व उनकी प्रार्थना करते हैं। मेरा अगला सवाल था कि आप यहाँ क्या कर रहे हैं ओर आप क्या काम करते हैं? उसके सवाल ने मुझे मामूली झटका दिया पर इसकी अपेक्षा थी मुझे। उसने कहा कि वह केवल पठान बाबा की प्रार्थना करने आता है ओर कुछ नहीं करता। उसे पठान बाबा में इतना मजबूत विश्वास था की उसे ओर काम करना अनावश्यक लगता था। पठान बाबा की सेवा में दिन व्यतीत करना उसे सबसे बढ़िया काम लगता था।

पठान बाबा के प्रति उसकी श्रद्धा मुझे बहुत मजबूत ओर शुद्ध प्रतीत हुई। ऐसी दिलचस्प कहानी सुनने के बाद मुझे उस जगह जाने की इच्छा बार – बार हुई। अगली बार जब मैं वहाँ गया तो मैंने एक वृद्ध मुसलमान को बाबा की प्रार्थना करते हुए देखा। मैंने उनकी प्रार्थना समाप्त होने तक प्रतिक्षा की ओर फिर उनसे पूछा कि यह किसकी दरगाह है। उस बुजुर्ग ने को भी जानकारी होने से इंकार कर दिया ओर लोगो में दरगाह के प्रति आस्था का कारण भी नहीं बतलाया तथा तुरंत ही वे फिर से प्रार्थना में लीन हैं गए। मेरे दिमाग में यह विचार आया कि श्रद्धा ही प्रार्थना के लिए पर्याप्त है। जब को तनमय होकर प्रार्थना करता है तब यह सारी बातें व्यर्थ हो जाती हैं कि वह किससे प्रार्थना कर रहा है।

लोगो की इस अचल श्रद्धा ने मुझे यह सोचने के लिए बाध्य कर दिया कि कैसे कोई 200–300 वर्ष पहले का व्यक्ति लोगो पर इतना प्रभाव रखता है? इस प्रश्न का उत्तर कदाचित हमारे हृदय में है। जिसके लिए हमारे हृदय में जितना अधिक विश्वास होगा श्रद्धा उतनी ही अचल तथा बलवती होगी। यदि मेरे हृदय में विश्वास है तो मेरी मनोकामना अवश्य पूरी होगी। उस दिन मुझे अनुभव हुआ कि श्रद्धा में कितनी शक्ति होती है। पठान बाबा उतने महान होंगे जितने उनके अनुयायी उन्हें मानेंगे। पठान बाबा के प्रति लोगो की भक्ति की यही एक मात्र व्याख्या मानते हुए मैंने भी पठान बाबा से प्रार्थना की तथा किले के मुख्य द्वार की ओर प्रस्थान किया।

सचिन आचार्य
आई.पी.जी. 2010

हिन्दी पखवाड़े का इतिहास

किसी भी देश के लिए स्वभाषा उसके स्वाभिमान तथा सांस्कृतिक आत्मसम्मान की परिचायिका होती है। पर भाषा में काम–काज करना एक प्रकार से परतंत्रता का बोध कराता है। जब हमारा देश आजाद हुआ तो संविधान निर्माताओं के समक्ष राजभाषा का प्रश्न अत्यंत जटिल साबित हुआ। भारत जैसे भाषाई विविधता वाले देश में कौन सी भाषा राजभाषा घोषित की जाए? अधिकांश लोग हिंदी के पक्ष में थे परंतु कुछ के मन में हिंदी के लिए कुछ नीतियां भी थी। परंतु विचार–विमर्श के बाद संविधान सभा ने 14 सितंबर 1949 को हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया। इसी के उपलक्ष्य मे हम 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाते है। संविधान सभा में हिंदी के पक्ष में माहौल बनाने में पुरूषोत्तम दास तथा सेठ गोविंद दास का योगदान अविस्मरणीय है।

तब से लेकर आज तक हिंदी ने लंबी यात्रा तय की है तथा विकास के पथ पर अग्रसर है। हिंदी आज भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा तथा विश्व की चौथी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा बन गई है। हिंदी भाषी लोग भारत के अलावा फिजी,सूरिनाम, मॉरिशस, त्रिनिडाड इत्यादि देशों मे भी बसते हैं। आज हिंदी में अनेक अखबार, पत्र–पत्रिकाओं का प्रकाशन हो रहा है। हिंदी उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखंड, झारखंड मध्यप्रदेश, राजस्थान हरियाणा, हिमाचल की कार्यालीय भाषा है।

हिंदी की साहित्य परंपरा अत्यंत समद्ध है तथा आज के हिंदी साहित्यकार भी हिंदी को अपनी अमूल्य कृतियों से गौरवान्वित कर रहे है। आधुनिक भारतीय साहित्य में हिंदी साहित्य को एक अपनी अलग पहचान है। ज्ञानपीठ पुरस्कार भारत का सर्वोच्च साहित्यिक पुरस्कार माना जाता है। यह पुरस्कार अब तक नौ हिंदी लेखकों को प्रदान किया जा चुका है।

ये लेखक निम्नलिखित है–

1. सुमित्रानंदन पंत 2. रामधारी सिंह दिनकर
3. सच्चिदानंद हीरानंद वात्सयायन अज्ञेय
4. महादेवी वर्मा 5. नरेश मेहता
6. निर्मल वर्मा 7. कुँवर नारायण
8. श्रीलाल शुक्ल 9. केदार नाथ

सरस्वती सम्मान अब तक दो हिंदी लेखकों, हरिवंश राय बच्चन तथा गोविंद मिश्र को प्राप्त हुआ है। मूर्तिदेवी पुरस्कार अब तक 14 हिंदी लेखकों को मिल चुका है –

1. वीरेन्द्र सखलेचा 2. विष्णु प्रभाकर
3. विद्यानिवास मिश्र 4. मुनि श्री नागराज
5. कुबेर नाथ राथ 6. श्यामचरण दुबे
7. निर्मल वर्मा 8. गोविंदचंद्र पांडे
9. राममूर्ति त्रिपाठी 10. यशदेव शल्य
11. कल्याणमल लोढा 12. राममूर्ति शर्मा
13. कृष्णबिहारी मित्र 14. गुलाब कोठारी

हिंदी का प्रचार–प्रसार विदेशों में भी हो रहा है। अतः विश्व के सभी हिंदी विद्वानों को एक मंच प्रदान करने हेतु विश्व हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया जाता है। यह अब तक विभिन्न स्थानों पर आयोजित हो चुका है। इसकी सूची निम्नलिखित है:–

वर्ष	स्थान
1975 (10–12 जनवरी)	नागपुर, भारत
1976 (28–30 अगस्त)	पोर्ट लुई, मॉरिशस
1983 (28–30 अक्टूबर)	नई दिल्ली
1993 (2–4 दिसंबर)	पोर्ट लुई, मॉरिशस
1996 (4–8 अप्रैल)	त्रिनिडाड टोबैगो
1998 (14–18 सितंबर)	लंदन
2003 (6–9 जून)	पारामरिबो (सूरीनाम)
2007 (13–15 जुलाई)	न्यूयॉर्क
2012 (22–24 सितंबर)	जोहान्सबर्ग (दक्षिण अफ्रिका)

इन सबके अतिरिक्त भारत सरकार भी हिंदी को विभिन्न प्रकार से प्रोत्साहित कर रही है। हिंदी भारत की राष्ट्रभाषा है तथा संपूर्ण भारत में इसकी स्वीकार्यता भारत की एकता का प्रतीक है।

संकलित

आइयें बाबा बनें

बहुत दिनों से मैं परेशान था। छोटी मोटी इंटर्नशिप करते और लिखते हुए बरसों–बीत गए। देश में चारों ओर करियर की भरमार है। कोई इंजीनियरिंग पर दांव लगा रहा है तो कोई मेडिकल को गले लगा रहा है कोई विदेश जाकर रिसर्च करने को सौभाग्य मानता है तो कोई आई आई एम में प्रवेश कर लाखों का पैकेज पाना चाहता है पर मुझे यह सब अब ठीक नहीं लगता।

मै चाहता हूँ कि करियर ऐसा हो जिसमें मेहनत भी कम लगे और करोड़ों का फायदा भी हो। लाख चिंतन करने के बाद सामने आया कि देश में सर्वश्रेष्ठ करियर बाबा बनने में है। बाबा गिरी से बेहतर कुछ भी नहीं है वाकई भारत वर्ष बाबाओं का देश है। यहाँ के कणकण में – बाबा विद्यमान हैं। सुबह से लेकर शाम तक नाना प्रकार के चैनलों पर भाँति–भाँति के बाबा– अवतरित होते रहते है रिमोट का कोई सा भी बटन दबाओं – परिणाम में एक नए बाबा का सृजन होता है।

पर इसमें बाबा का भी कोई दोष नहीं है। बेचारे बाबा भी क्या करें। भारतीय व्यक्ति है ही बला का धार्मिक वह सुबह बाबाओं के चरण चांप कर निकलता है और उनके आशीर्वाद स्वरूप शाम को रिश्वत से भरी जेब लिए लौटता है। वह सुबह बाबा का आशीर्वाद लेकर सामानों में मिलावट करता है और उनके भलीभांति खपने पर प्रसाद चढ़ा बैठता है।

एक आदमी का जीवन बाबा के बिना अधूरा है। उसका जन्म उन्ही के आशीर्वाद से होता है, आशीर्वाद से कक्षाएँ पास करता है। फिर शादी, नौकरी और प्रमोशन भी उन्हीं के आशीर्वाद से पाता है।

भारतीय व्यक्ति की इसी महान धार्मिकता के कारण बाबाओं का अनवरत रूप से विकास हो रहा है। पहले बेचारे कवि का इस मुहावरे कॉपीराइट बना हुआ था कि जहाँ। न पहुंचे रवि वहां पहुंचे कवि। अब इसका पेटेंट बाबाओं ने ले लिया है। अब वे हर जगह दिखतें है वे कभी फिल्मी कलाकारों को योग कराते हैं तो कभी खिलाड़ियों को सफलता के टिप्स देते दिखाई देते है।

राजनेताओं के साथ तो उनका चोलीदामन का साथ है राजनेता बाबाजी के चरण चांपते हैं और वे बदले में अनवरत सत्ता का आशीर्वाद पाते है। न जाने कितने अधिकारी और धन्ना सेठ उनके दरवाजे पर लाइन लगाकर खड़े होते है।

और अब बाबाओं कों सत्ता की ओर बढ़ते देखकर मुझे लगता है कि वाकई बाबा बनना ही सर्वश्रेष्ठ है। एक व्यक्ति सफल बाबा बन जाए तो उसकी सात पीढ़ियों का उद्धार हो जाता है। सफल बाबा का सफल मैनेजमेंट उसे परम सत्ता की ऊंचाइयों की ओर ले जाता है। सो आजकल घरवालों को सामने बिठाकर उपदेश देता रहता हूँ। घरवालों को उम्मीद है कि सफल बाबा बनते ही मेरे दिन फिर जाएंगे। सो बस मेहनत कर रहा हूँ। देखिए आगे क्या होता है?

विनायक अग्रवाल
आई.पी.जी. 2012

दार्जिलिंग की यात्रा

24 मई 2012, दोपहर दो बज कर चालीस मिनट पर हम लोग बागडोगरा हवाई–अड्डे पर उतरे। सिलिगुरी से तकरीबन 17 किलोमीटर दूर स्थित यह हवाई–अड्डा भारतीय वायुसेना की 20 विंग को आश्रय भी देता है साथ ही बहुत महत्वपूर्ण रणनीतिक स्थान भी माना जाता है। प्राकृतिक सुन्दरता का नजारा हवाई –पट्टी पर उतरते ही साक्षात् होता है। बागडोगरा से दार्जिलिंग की दूरी करीब 70 किलोमीटर है जो कि हमने गाड़ी से सफर पूरा करने का सोचा ताकि बीच में प्राकृतिक सौंदर्य का भी पूरा लुत्फ उठा लें।

सफर करीब ढाई घंटे का रहा जिसमें बीच में अनेकों प्राकृतिक नजारे हमें देखने को मिले, सुन्दर और हरे भरे पेड़ो से सजे ऊँचे–ऊँचे पहाड़ हमे प्रकृति के और करीब खीचं रहे हों और मानों कह रहें हों की यह तो केवल शुरुआत है, अभी जन्नत बाकी है।

सुंदर झरनों का पानी इन पहाड़ों से निकलते समय मानो ऐसे प्रतीत होते हैं जैसे नयी दुल्हन की मांग में सिंदूर। साफ, स्वच्छ तथा पीने में अमृत जैसा, यह पानी हमें शहरों में कहाँ नसीब होता है। शुरूआत का सफर उतना चढ़ाई भरा नही था लेकिन आखरी 20 कि.मी. मानों पहाड़ी रास्ता जमीन से लम्बरूप बना रहा था।

गाडी के ड्राईवर ने बहुत सहजता से रास्ता पूरा किया, एक स्थान पर कच्चा रास्ता होने के कारण थोड़ी देरी हुई किन्तु पदयात्रियों कि मदद से गाडी को धक्का मिलने पर वह स्थान भी हमने सुरक्षित तय कर लिया। रात होने ही वाली थी और अभी आधे घंटे का सफर बाकी था। मेरे संग बैठे मित्र जन आपसी ठहाकों में व्यस्त थें तो कुछ संगीत और अन्ताक्षरी में, मैं स्वयं आगे कि सीट पर बैठ कर सफर का लुत्फ ले रहा था।

सायंकाल में मानों ऐसा लग रहा था जैसे गाडी बादलों से बात कर रही है, कुछ ओस कि बुँदे मेरे चेहरे पर भी पड़ी और एहसास हुआ कि मनुष्य के जीवन में यात्रा करना कितना जरूरी है यात्रा बिना जीवन अधूरा है।

शाम 6 बजे हम अपने होटल वेल्कम में पहुँचे गए और जाकर रात 8 बजे खाना खाकर सो गए क्यूँकि अगले दिन हमें सुबह 2:30 बजे उठकर टाईगर हिल पर होने वाले सूर्योदय की सुन्दरता का वर्णन सुना था और आज मैं उसे साक्षात् देखने वाले थे। करीब आधे घंटे के कच्चे रास्ते को तय करने के पश्चात् हम एक टावर पहुंचे जहां से टाईगर हिल का नजार साफ दिखता था। उंचाई होने के कारण सर्दी बहुत थी और बर्फ से लदे टाईगर हिल के पहाड़ मानों हिमालय से प्रतीत हो रहे थे। 4 बजकर 15 मिनट पर सूर्य कि पहली किरण दिखाई दी और धीरे-धीरे मन मोह लेने वाला दृश्य हमारे सामने था, इतना सुन्दर सूर्योदय मैंने अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा था।

टाईगर हिल से निकल कर हम अपने दूसरे स्थान गुरखा चाय उद्यान की और निकल पड़े जो कि टावर से महज 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। दार्जिलिंग की चाय विश्वभर में प्रसिद्ध है तथा देश के लिए गरिमा का एक और स्रोत है दूर-दूर तक फैले चाय के बगीचे स्वच्छ हवा को और सुगन्धित कर देते है और यह बात पक्की है कि आप यहाँ कि चाय पीए बिना और खरीदे बिना जायेंगे तो आपकी यात्रा मेरे अनुसार अधूरी ही रह जायेगी।

हमने एक जगह रूक कर 2 किलो ताजी चाय खरीदी और उसका स्वाद भी लिया, सच पूछिए तो मैने ऐसी चाय अपने पूरे जीवन कही नहीं पी है कड़क और इतनी शुद्ध, दार्जिलिंग से आपकी मुहब्बत और बढ़ जाती है।

दार्जिलिंग की चाय का आनंद लेने के बाद हम अपने अगले स्थान जैविक उद्यान की और चल दिए। पदमजा नायडू हिमालयन जैविक उद्यान माउंटेनिंग संस्थान के दायीं ओर स्थित है। यह उद्यान बर्फीले तेंदुओं, बंगाल टाईगर, टाईगर पहाड़ी भेड़ियों तथा लाल पांडा के लिए काफी प्रसिद्ध है।

यहाँ पर भिन्न-भिन्न प्रकार के पक्षियों, जानवर तथा मछली संग्रह देखकर तथा उनके विषय में जानकर आप अपने आपकों प्रकृति के और नजदीक पाते हैं। तथा बच्चों के लिए यह अवसर काफी मनोरजंन रहता है। यहाँ से निकल कर हम अपने आखिरी स्थान तिब्बतियन रिफ्यूजी कैंप कि ओर निकल पडे जिसकी स्थापना 1959 ई में की गई थी जिसके एक वर्ष पूर्व दलाई लामा ने भारत में शरण ली थी।

यहाँ मौजूद बुद्ध स्तूपा दार्जिलिंग की शान है। स्तूपा के भीतर जो शान्ति है वह शब्दों में बयां करना कठिन है। यहाँ पर उपस्थित प्राचीन बुद्ध पुस्तकों की पुस्तकालय अपने आप में एक खजाना है जो कि औषधि से लेकिन ध्यान, योग तथा मार्शल आर्ट विषयों पर रोशनी डालती हैं। स्तूप में बुद्ध की प्रतिमा के सामने अगरबत्ती जला कर हमने वहां से विदा ली और होटल की और रवाना हुए।

जीवन की रोजमर्रा की भाग दौड़ में हम भूल जातें है कि जीवन केवल जीने के लिए नहीं बल्कि खुश रहने के लिए होता है जो कि बुद्ध के अनुसार प्रथम बारी में अगर सही ढंग से नही जीया जाए तो मनुष्य संसार के चक्र में फँस जाता है। बुद्ध को इसका ज्ञान खुद तब हुआ जब वह गहन

तपस्या कर रहे थें और भूख प्यास से व्याकुल उनका शरीर मृत हो रहा था। तब एक अनजान आवाज उनकों सीख देती है – "वीणा की तारों को इतना भी ना खीचों, कि वह टूट ही जाएँ"। यह सीख लेकर हम दार्जिलिंग से जा तो रहे थे पर मन में एक ही वादा करके, जल्द में फिर लौटूँगा।

अभिषेक उपमन्यु
आई.पी.जी. 2009

कहानी मिडिल क्लास की

रूपये में रिकॉर्ड गिरावट हो या सोने के बढ़ते दाम या शेयर मार्किट का उतार–चढ़ाव या पेट्रोल के आसमान छूते दाम, इन सब का न तो अमीर आदमी पर फर्क पड़ता है न गरीब आदमी पर क्योंकि अमीर को जो लेना है वो लेना है चाहे कितने भी मँहगा हो बल्कि ज्यादा मँहगा है तब तो जरूर लेना है और गरीब आदमी को जो नहीं लेना वो नही लेना चाहे कितने भी सस्ता हो जाए।

इन सबका सबसे ज्यादा फर्क पड़ता है मिडिल क्लास आदमी पर, आप इसे आम आदमी भी कह सकते हैं ये वो आदमी है जो हर चीज की सबसे ज्यादा टेंशन लेता है। पेट्रोल के दाम बढ़ने की टेंशन, एलपीजी के दाम बढ़ने की टेंशन, सोना मँहगा होने की टेंशन, होम लोन मँहगा होने की टेंशन, रूपये में गिरावट की टेंशन हर बात की टेंशन और भाई ले भी क्यों न ले सब से जुड़ें हैं इससे आम आदमी के सपने वो सपना देखता है।

गाड़ी लेने का तो पेट्रोल के बढ़ते दाम सपना तोड़ देते है, सोने के बढ़ते दाम उसे ये सोचने पर मजबूर कर देते है कि आगे कैसे वह अपने बच्चों की शादी में गहने बनवा पायेगा। थोड़ी बहुत सेविंग करके शेयर मार्किट में पैसा लगता है तो शेयर मार्किट के उतार चढ़ाव उसका बजट बिगाड़ देते है।

ये बेचारा हर चीज से दुखी है सुबह उठता है तो ऑफिस में कहीं लेट न हो जाये इस बात की टेंशन क्योंकि इसे पता है 3 दिन लेट होने के बाद इसकी एक हाफ डे की सैलरी कट जायेगी, रास्ते की टेंशन, ऑफिस में काम की टेंशन, जब बेचारा प्रमोशन के बारे में पूछता है तो मंदी की टेंशन देकर चुप कर दिया जाता है, ऑफिस से निकलने से पहले ही घर से फोन आ जाता है अभी तक निकले नहीं "और एक लम्बी" लिस्ट पकड़ा दी जाती है।

जो लेते जाना है बेचारा जेब में हाथ डालता है देखता है कितने पैसे है फिर एटीएम से जाकर उतने ही पैसे निकलता है जितने का समान लेते हुए जाना है भले ही बैंक में चार सौ पांच सौ रूपये हो फिर भी चार बार कन्फर्म करता है कि एटीएम ढंग से एग्जिट हो गया की नहीं। रास्तें में सब्जी आसमान छूते दाम, दूध के बढ़ते दाम, यहाँ तक की ऑटो का बढ़ता किराया हर चीज उसे टेंशन दे रही है बस जो चीज नहीं बढ़ रही वो है उसकी सैलरी क्योंकि मंदी है ना।

घर पहुँचने पर अलग तरह की टेंशन इतना लेट क्यों आये, ऑफिस में क्या बस तुम्हीं रह गए हो काम करने को, अरे ये क्यों ले आये, अरे वो क्यों नहीं लाये, आज ये हुआ, आज वो हुआ। बेचारा खा पीकर फिर सुबह जल्दी भागने की टेंशन के साथ सो जाता है पर इसकी इस हालत का जिम्मेदार भी यही है क्योंकि ये मानने को तैयार नहीं है कि ये गरीब है।

ये खुद को मिडिल क्लास मानते है भाई मेरे हिसाब से तो दो ही वर्ग है अमीर और गरीब और जो खुद को गरीब मानने को तैयार नहीं साथ ही अमीर भी नहीं है वो है ये मिडिल क्लास लेकिन अगर देखा जाए तो गरीब और मिडिल क्लास में ज्यादा अंतर नहीं है गरीब मॉल में घुसने की हिम्मत ही नहीं करता और मिडिल क्लास मॉल में जाता तो है पर घूमकर प्राइस टैग देख कर या ज्यादा से ज्यादा एक 15 रूपये की आइसक्रीम खाकर आ जाता है।

गरीब रेस्टोरेंट में नहीं जाता पर मिडिल क्लास जाता तो है, गरीब चाय की दुकान पर अखबार पड़ता है और मिडिल क्लास अंग्रेजी अखबार लेता है गरीब पिज्जा नहीं खाता पर मिडिल क्लास को पिज्जा बहुत पसंद है भले ही वो 49/– का पिज्जा मैनिया क्यों न हो। गरीब को होली दिवाली रक्षाबंधन पता है पर मिडिल क्लास को

जन्म दिन, शादी की सालगिरह, फ्रेन्डशिप डे, रोज डे, वेलेंटाइन डे फादर्स डे और पता नही कितने डे मनाने जरूरी है।

मतलब ये है कि इनकों ऐसे ही आगे बढना है और मानना भी नही है कि ये गरीब है न कुछ करना है इन्होंने खुद को अमीर बनाने के ये शॉर्टकट निकले है जो इन्हें और गर्त में धकेल रहे है गरीब चुप बैठा है, अमीर को कोई फर्क पड़ता नही, जो कुछ कर सकते है वो यातो अनलिमिटेड टॉक टाइमरिचार्ज करा कर पूरे दिन व्यस्त है या फेसबुक पर पूरे दिन बिजी है या पान की दुकान पर चाय की दुकान पर सरकार को कोसते हुए नजर आते है पर मुझे कोई कुछ करता नजर नहीं आता इसमें या तो मेरी नजर का दोष है या ऐसा ही है लेकिन अगर ऐसा ही है तो वो दिन दूर नहीं जब हम दुबारा से गुलाम होंगे क्योंकि मुझे लगता है हमने खुद गधे की तरह बना लिया है काम कर लो पर कुछ नया सोचेंगे नहीं।

जिम्मेदारियों की वजह से काम तो कर लेते है पर उस काम में नया क्या कर सकते है ये हमसे न कराओ । हम आलोचक तो बन सकते है पर आविष्कारक नहीं, हमारी सबसे बड़ी खासियत तो ये है कि हम सबसे ज्यादा ठलुआ होकर भी सबसे ज्यादा व्यस्त हैं । "घोटालों से भरा हुआ है मेरा प्यारा देश, अमीर गरीब मिडिल क्लास सब का प्यारा देश"।

सफल व्यक्तित्व के संघर्ष देखिये ना कि उनका छिद्रान्वेषण करिए सफलता का मंत्र यदि बाजार में बिकता तो शायद हम सभी खरीद लेते लेकिन यह बाजार में नहीं हमारे अन्दर की बनावट में ही निहित होता है। हमारे जीवन का आग्रह किसी एक बिन्दु पर दृढ़ होता जाता है जिसे हम कई बार जुनून की संज्ञा भी देते है, तब ही व्यक्ति उस क्षेत्र में सफल हो पाता है। विश्व में न जाने कितने वैज्ञानिक, कितने चिकित्सक, कितने इंजीनियर, कितने कलाकार सफलता के झण्डे गाड़ते रहते है लेकिन फिर भी वे विश्व पटल पर दृष्टि गोचर नही होते है। लेकिन कुछ क्षेत्र ऐसे है जिन्हें हम, भारतीय–चौसठ कलाओं के दायरे में रखते है और इनमें निष्णात व्यक्ति समाज के सम्मुख सफल व्यक्ति माना जाता है। नृत्य, गायन, लेखन, चित्रकारी आदि कुछ ऐसे ही विषय है जिनकी सफलता की कहानी सारा विश्व कहता है। माइकल जेक्सन नृत्य में प्रवीण हुए और उन्हें सारे विश्व ने स्वीकार किया, लता मंगेशकर जैसे गायक गायन के क्षेत्र में, अमिताभ बच्चन जैसे कलाकार अभिनय के क्षेत्र में, प्रेमचन्द जैसे लेखक लेखन के क्षेत्र में, सचिन तेंदुलकर जैसे खिलाड़ी खेल क्षेत्र में विश्व के समक्ष स्थापित है।

इनके संघर्ष की गाथा को पढ़कर प्रेरणा मिलती है, हमें भी आगे बढ़ने का हौसला मिलता है अधिकांश सफल व्यक्तित्वों ने अपनी यात्रा शून्य से प्रारम्भ की और वे अपने जुनून के कारण क्षितिज तक जा पहुँचे। लेकिन कुछ ऐसे भी व्यक्तित्व होते है जो क्षितिज तक तो नही पहूँच जाते लेकिन आसपास चर्चित जरूर रहते है उन्हें भी समाज सफल व्यक्तित्व में ही गिनता है। युवा पीढ़ी के समक्ष जब भी प्रेरणा देने की बात आती है तो इन्ही आसपास के सफल व्यक्तित्व के बारे में जानकारी दी जाती है।

हमारे समाज में दो प्रकार के लोग है। एक है जो ऐसे सफल व्यक्तित्वों को प्रेरणा स्रोत मानते है, उनका सम्मान करते है। दूसरे ऐसे लोग है जो सफल व्यक्तित्व पर प्रश्नचिन्ह लगाते है, वे हमेशा आलोचना का शिकार ही उन्हें बनाते है। एक टीवी का एंकर, आईपीएल क्रिकेट की एंकरिग करने लगा, तब एक टिप्पणी आयी कि यह क्या जानता है क्रिकेट की बारे में?

अब हम कितना जानते है उस एंकर के बारे में? उसमें कितनी प्रतिभा है ? यह हम नही जानते, लेकिन उसकी सफलता पर प्रश्नचिन्ह लगा देते है। आपके आसपास का कोई युवा अचानक ही सफल व्यक्ति बनकर आपके समक्ष उपस्थित होता है तब ऐसे हीनकारात्मक लोग कहते है कि अरे कल तक तो इसे नाक पौछना नही आता था और आज कैसे यहाँ तक पहुँच गया अब उनसे पूछिए कि सभी बचपन में नाक पहुँचने की कला से अनभिज्ञ थे।

ऐसे तो नहीं हो सकता कि पैदा होते ही बालक रोने के स्थान पर गायन प्रारम्भ कर दे श्री कृष्ण जो चौसठ

कलाओं में निपुण थे, उनका बाल्यकाल भी माखन चोरी करते हुए ही व्यतीत हुआ था। आइन्सटीन को तो बुद्धू बच्चा कहा जाता था।

ऐस नकारात्मक लोग स्वयं का कितना नुकसान करते हैं, शायद उन्हें समझ नही आता। वे सारा दिन इसी दुख से जले जाते हैं कि फला व्यक्ति का समाज में कैसे नाम हो गया? वे अपने अन्दर नकारात्मकता का जहर भर लेते हैं। जहाँ कही भी बैठेंगे, ऐसे सफल लोगों के बारे में नकारात्मक चर्चा ही करेंगे। जो वाक्य मैंने सुनें हैं वे हैं।

–"रामदेव आठवी जमात पास है" "अन्ना हजारे ड्राइवर था" "सोनिया गांधी वेट्रेस थी" आदि। सफल व्यक्तित्वों के लिए उनका सबसे क्षुद्र बिन्दु समाज के समक्ष प्रस्तुत किया जाता है। प्रस्तुत ही नहीं किया जाता, उसी बिन्दु को लेकर मखौल उड़ाया जाता है। वह व्यक्ति निश्चित रूप से आहत होता होगा, लेकिन उससे अधिक ऐसे नकारात्मक लोग अपने अन्दर विस्तार ले रहे जहर से रोगग्रस्त होते रहते हैं।

यदि हम किसी सफल व्यक्तित्व के बारे में जानकर प्रसन्नता का अनुभव करते है, तब हमारे अन्दर सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है, हम उसके गुणों एवं कृतित्व को अपने अन्दर धारण करने का प्रयास करते हैं लेकिन जब हम ईर्ष्या के वशीभूत हो केवल निन्दा करने में ही लगे रहते है तब अपने विकास के सारे मार्ग बन्द कर लेते हैं। इसलिए किसी की उपलब्धि पर प्रसन्न होना सीखिए ना कि खिन्न होना। उसके संघर्ष की गाथा को जानने का प्रयास कीजिए तब विदित होगा कि कितने संघर्षों के बाद सफलता प्राप्त हुई है।

सफलता कभी भी 'हाथ पर हाथ धरे, बैठे से नहीं प्राप्त होती है, उसके लिए तो बस परिश्रम का ही मार्ग निहित है।

नवीन संगतानी
आई.पी.जी. 2012

मनुष्य के विकास से पुस्तकालय का सम्बन्ध

मूल्यांकन अध्ययन मनुष्य जन्म से ही जिज्ञासु प्रवृत्ति का प्राणी होता है। यही जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण मनुष्य का विकास संभव हुआ। इस बात का इतिहास गवाह है कि आदि काल में मनुष्य वन में अन्य जानवरों की तरह रहता था, मगर उस जंगल में भी उसने जिज्ञासु प्रवृत्ति के कारण कई आविष्कार किये है। जैसे पत्थर टकराकर आग का आविष्कार एवं गोल वस्तु बनाकर पहिये का आविष्कार एवं फलों को खाकर उसके बीज से उसी तरह के पेड़ पौधे उगाकर अनाज का आविष्कार किया जैसे–जैसे मानव ने विकास की दहलीज पर कदम रखा उसका बहुत तेजी से विकास हुआ वर्तमान में साईकिल से लेकर हवाई जहाज, रेलगाड़ी, कम्प्यूटर, मोबाइल फोन व अन्य चीजों के आविष्कार मानव मस्तिष्क की देन है।

मानव ने आविष्कार कर सूचनाओं को पुस्तकों में वर्णित कर दिया है। प्राचीन काल से ही पुस्तकालय मनुष्य के ज्ञानर्जन में सहयोगी रहे हैं। पुस्तकालय एक समाजिक संस्था है। जो समाज के कल्याण में निरंतर सहयोगी रही है। भारत में सबसे बड़ा दान विद्या का दान माना जाता है वास्तव में पुस्तकालय विद्या दान करने के अथाह सागर होते है।

अतः मनुष्य के विकास में पुस्तकालय के सम्बन्ध निम्नलिखित क्षेत्रों में अत्याधिक महत्वपूर्ण रहे हैं।

1. **अनुसंधान एवं तकनीकी क्षेत्र में** :–
   किसी देश की प्रगति का आकलन उसके वैज्ञानिकों द्वारा किये जा रहे शोध से किया जा सकता है और यह शोध करने में वैज्ञानिक पुस्तकालय के माध्यम से ही सफल हो जाते क्योंकि उन्हें अपने शोध से सबंधित सामग्री पुस्तकालय से प्राप्त होती है। विदेशो में क्या शोध कार्य चल रहे है और उनमें क्या तकनीकी विकास एवं परिणाम प्राप्त हो रहे है उनसे सभी जानकारियाँ पुस्तकालय में उपलब्ध शोध पत्रिकाऐं प्राप्त की जा सकती है।

2. शिक्षा के क्षेत्र में :–

पुस्तकालयों का सर्वाधिक उपयोग शिक्षा के क्षेत्र में छात्रों एवं अध्यापकों के द्वारा किया जाता है। छात्र जैसे जैसे ज्ञान प्राप्त करता जाता है उसकी जिज्ञासा उसे और अधिक ज्ञान प्राप्त करने के लिऐ प्रेरित करती है। इसलिये वह पुस्तकालय की समग्र अध्ययन सामग्री का अध्ययन करता है। अध्यापकों को भी अपने ज्ञान विस्तार में पुस्तकालय से सहायता मिलती है।

3. उद्योग एवं व्यापार :–

किसी भी देश के व्यापार एवं उद्योगों के विकास पर निर्भर करता है। उद्योगों एवं व्यापारों में पुस्तकालयों का उपयोग महत्वपूर्ण हो गया है विभिन्न प्रकार के व्यापारी एवं उद्यमी पुस्तकालयों से ज्ञान प्राप्त करके अपने उद्योगों में सफल हुये। जैसे – इंजिनियर्स, डाक्टर एवं वकील आदि।

4. मानव विकास के आधार :–

पुस्तकालय ज्ञानार्जन का सरलतम केन्द्र होते है जिनमें से विभिन्न ज्ञान सामग्री का उपयोग कर व्यक्ति अपना ज्ञान बढ़ाकर प्रगति एवं विकास करता है।

वर्तमान समय में सूचना का विस्फोट सा हो गया है। सूचना इतनी अधिक मात्रा में उपलब्ध है। कि व्यक्ति किसी भी क्षेत्र में किसी भी प्रकार की सूचना सेकण्डों में प्राप्त कर सकता है। क्योंकि वर्तमान में पुस्तकालय आधुनिक तकनीकी से इस प्रकार तैयार किये गये है। कि किसी क्षेत्र के पाठकों को अपने क्षेत्र से सम्बन्धित सूचना प्राप्त करने में व्यर्थ समय बर्बाद करने की जरूरत नहीं है।

उपरोक्त विवरण से स्पष्ट है कि पुस्तकालय प्राचीन काल से मानव विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान देते आ रहें है।

संजय कुमार सोनी
जितेन्द्र दुबे
(पुस्तकालय सहायक)

सत्यमेव जयते

"इन कार्यक्रम को सुन के, क्या हम चैन की नींद सोयेंगे,
इनके झूठे वादों को क्या हम जिंदगी भर संजोयेंगे।"

सत्यतेव जयते यानि सत्य की विजय। यह भारत देश का नारा होने के बावजूद भी भारतीयों के लिए अपरिचित नारा है। वे देश में चल रहे अपराधों से भली भाँती परिचित होने बावजूद भी अपने आँखे मूंदे बैठे है। इन अपराधों पर रोशनी डालने वह समाज की सोच बदलने के प्रयास में भारत के प्रसिद्ध फिल्मी अभिनेता आमिर खान द्वारा 'सत्यमेव जयते, प्रसारित किया गया। अब प्रश्न ये उठता है कि क्या ये कार्यक्रम हमारी सोच बदलने में साकार होगा? आप ही बताइए की जब तीन घंटे की फिल्म 'हम साथ–साथ है, हमारे दिलों में पारिवारिक संस्कारों को नही घोल पायी तो क्या एक घंटे का सत्यमेव जयते हमारे सोच बदल पायेगा?

"यदि होते तुम इस समाज के, तो आँख तुम्हारी खुल जाती",
"क्या टीवी के ऐसे कार्यक्रम से सोच हमारी बदल जाती,"
"ऐसे कार्यक्रम से नही मिट सकता,
समाज में फैला ये शोषण, फैला ये शोषण,"

सत्यमेव जयते के चौथे प्रकरण में कुछ डॉक्टरों की कुचरित्रता इस देश के सभी डॉक्टरों की गरिमा को ठेस पहुँचाई गयी है। मानव जाति की मानसिकता ही ऐसी होती है कि वे बुराइयाँ जल्दी अपना लेता है। इसलिए आमिर खान द्वारा डॉक्टरों के कुकर्मो का प्रदर्शन करने से आने वाले युग को गलत तरीके से पैसा ऐंठना की प्रेरणा मिलेगी। सत्यमेव जयते में दलितों के शोषण को प्रदर्शित किया गया है पर क्या उस कार्यक्रम में उन्हें दिए गए आरक्षण पर विचार प्रकट किये गए ?

न ही हर क्षेत्र में सरकार द्वारा उन्हें ध्यान में रखा हुआ है। और यदि उनका मैला धोने पर परेशानी व्यक्त की गयी है तो यह समस्या तभी खत्म होगी जब उनके लिए रोजगार के अन्य कार्यो में उन्हें काम करने दिया जायेगा। यदि इस

समाज को ऊपर उठाना है तो हमें स्वयं को ही बदलना होगा। जैसा कहा भी गया है।

''ये कार्यक्रम नहीं बदल सकते समाज की सोच,
और डालते है हमारे शासन पर दवाब,
नहीं आ सकता समाज के रिवाजों में ठहराव,
अगर लोग ही नहीं चाहते बदलाव। ''

और यदि कोई व्यक्ति अपना योगदान देना चाहता है तो उसे गलत स्रोत से बनायी गयी गैर कानूनी वेबसाइट पर पैसे दान करने का शिकार बनाया जा रहा है। मै आमिर खान महोदय को यह बताना चाहती हूँ कि बॉलीवुड के अन्दर जहाँ उन्होंने अपनी पहचान बनायी है, वहाँ नव युवक युवतियों का भरपूर शोषण होता है जिसके बारे में आमिर खान पूर्ण रूप से परिचित है। मैं उन्हें यह आभास दिलाना चाहती हूँ कि देश को सुधारने से पहले वह अपने कार्यक्षेत्र में होने वाले अपराधों को सुधारे। यह उनका देश के प्रति सबसे बड़ा योगदान होगा ।

"यदि कुछ कर दिखाना है तो झाँको अपने मन दर्पण में,
यदि सत्य को अपनाना है तो उठाओ कुछ ऐसे कदम खुद ही जग में"

अन्त में मैं यह कहना चाहती हूँ कि यदि हमें अपने सपनों को साकार करना है तो हमें हमारी सोच को स्वयं की समझ से बदलना होगा ना कि किसी के कहने से क्योंकि भारत को कुरीतियों से बचानें के लिए हमें दिल से ज्यादा दिमाग का प्रयोग करना होगा। तो चलिए हम सब मिलकर आज यह प्रण लेते है कि –

"अगर भारत को कुरीतियों से बचाना है,
अगर भारत को फिर एक सोने की चिड़िया बनाना है,
तो सत्यमेव जयते कुछ नहीं कर सकता
हमें स्वयं अपने मन, तन दिमाग से
इन कुरीतियों को भगाना है, भगाना है।"

सुरभि जैन
आई.पी.जी. 2012

कन्या भ्रूण हत्याः एक अभिशाप

भारत जैसे विकासशील देश में आज भी महिला को कम अहमियत दी जाती है। लोगों का मानना है कि महिला चाहे कुछ भी कर लें वे कभी पुरूषों से आगे नही निकल सकती। जबकि ऐसा नही है। कल्पना चावला, पी.टी. उषा, इंदिरा गाँधी, सोनिया गाँधी आदि कई ऐसी महिलाएं है जिन्होंने भारतीय समाज में एक मिसाल कायम की है।

आज के पिछड़े समाज में लड़की के जन्म लेने को एक अभिशाप माना जाता है। लड़की के जन्म लेते ही या तो फेंक दिया जाता है या फिर कहीं भी छोड़ दिया जाता है। आज का शिक्षित समाज यह मानने को तैयार नहीं है कि एक काम कामयाब पुरूष के पीछे एक महिला का हाथ होता है।

खुद जन्म देने वाली माँ भी इतना नही सोचती कि वह खुद भी तो एक लड़की है, तो फिर वह अपने संतान के साथ ऐसा कैसे कर सकती है ? यह हमारे भारतीय समाज के लिए एक शर्मनाक बात है।

यदि लड़कियों को भी आगे आने का अवसर मिल जाए तो वो भी बहुत कुछ कर सकती है। ऐसा करने के लिए हमें समाज में हो रहे अन्याय को रोकना होगा जो लोग लड़की के जन्म को पाप मानते है, उन्हें लड़कियों के मानव जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में अवगत करना होगा। "लड़का और लड़की में अंतर" यह मनोभावना नही रखनी चाहिए। बल्कि जिन महिलायों ने अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, उनसे शिक्षा लेनी चाहिए और लड़की को भी खुद पर गर्व होना चाहिए कि वह कुछ भी करके दिखा सकती है। कन्या भ्रूण हत्या जैसे अभिशाप से ही हमारा समाज आगे नही बढ़ पा रहा है। लड़की के जन्म को लड़के की तुलना में कम महत्व दिये जाने का नतीजा आज हमारे सामने है – लिंगानुपात। लड़कियों की कमी से कई सामजिक कुरीतियाँ भी उत्पन्न होती है।

यदि हम अपने 21वी सदी के भारत को विकसित देखना चाहते है तो हमें "कन्याभ्रूण हत्या" जैसे अभिशाप को समाप्त करना ही होगा। जो लोग ऐसा करते है या ऐसा

करने को बढ़ावा देते है, उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दिलाने का प्रावधान करना चाहिए।

हम सभी को यह प्रण लेना होगा कि "बेटी है अनमोल, इसका नही है कोई तौल।"
हर माता – पिता को अपनी बेटी पर गर्व होना चाहिए ।

निकिता चौधरी
आई.पी.जी. 2012

कोचिंग संस्थानों के अनुभव

शिक्षा जीवन का एक महत्वपूर्ण भाग है । अपने बच्चों को शिक्षा ग्रहण कराने के लिए माता–पिता कोई प्रयास नही छोड़ते है। आज के इस प्रतियोगिता भरे युग में हर कोई अपनी क्षमता और प्रतिभा को बढ़ाना चाहता हैं। भविष्य में इंजिनियर या डॉक्टर बनने के सपने को पूरा करने के लिऐ बच्चे कोचिंग संस्थानों का सहारा लेते है। मैंने भी कोटा शहर के एक कोचिंग संस्थान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान की प्रवेश परीक्षा की तैयारी के लिए जाया करती थी।

वहाँ पर अनुभवी एवं ज्ञानी शिक्षक पढ़ाते थे। वे हमें विभिन्न विषयों के बारे में गहराई से पढ़ाते थे। हमें हर विषय के हर बिंदु को बहुत ही शालीनता के साथ पढ़ाते थे। सभी छात्रों के मन में कोई भी शंका या किसी भी प्रकार का असमंजस नही रहने देते थे। सभी विद्यार्थियों को बराबर का महत्व दिया जाता था। वहां पर एक ही विषय के कई प्रकार के प्रश्न कराये जाते थे जिससे विद्यार्थियों को परीक्षा से पहले सभी तरह के प्रश्नों का ज्ञान हो। परन्तु एक दूसरे शहर में रहना जो अपने घर से बहुत दूर हो बहुत दिनों के लिए कठिन होता है। मुझें वहाँ रहकर घर की बहुत याद आती थी। कोचिंग की परीक्षायों का स्तर ऊँचा होता था जिससे विद्यार्थियों के मन में अपनी क्षमता को लेकर गलतफहमियां उत्पन्न हो जाती थी। छात्रों के ऊपर पढ़ाई का बहुत बोझ होता था। कोचिंग की कक्षाओं के लिए छात्र अपने शोध विद्यालय की कक्षाओं पर ध्यान नही देते थे।

इन अनुभवों से मैंने यह सिखा कि शिक्षा ग्रहण करने के लिए बाहरी सहायता की अधिक आवश्यकता नहीं होती है। शिक्षा अगर हम पूरे मन एवं एकाग्रता के साथ करें तो हमें कोचिंग संस्थान की बहुत कम आवश्यकता है। परन्तु प्रतियोगिता के युग में हमे वर्तमान दौर के पद्धति के बारे में कोचिंग संस्थनों से जानने को मिलता हैं। इस कारण उनकी सहायता को हम बिलकुल नकार नहीं सकते हैं। कॉलेज में आकर यह एहसास होता है कोचिंग संस्थान से मिली सहायता के कारण ही आज मैं यहाँ हूँ।

प्राची सिंह
आई.पी.जी. 2012

ईदगाह– साहित्यिक विवेचना

सत्य है– "साहित्य समाज का दर्पण है"। भारत के यथार्थ को समझने का सर्व श्रेष्ठ माध्यम है, हिंदी साहित्य। यूँ तो हिंदी साहित्य अनेक महान लेखकों, कवियों, व्यंग्यकारों से सुसज्जित है किन्तु एक लेखक है जिसकी कलम अपनी रचनाओं से हिंदी साहित्य को संपूर्ण बना देती है, वो महान लेखक हैं– मुंशी प्रेमचंद। निस्संदेह इनकी कहानियाँ तथा उपन्यास वास्तविक भावनायों से ओतप्रोत है। फिर भी यदि इनके कहानी संकलन से कोई कहानी सही में मन को छू जाती है तो वो है– 'ईदगाह'। आइये, ईदगाह कहानी के छुए– अनछुए पहलुओं पर दृष्टि डालते हैं–

ईदगाह । जैसा कि शीर्षक से ही प्रतीत हो जाता है कि यह कहानी ईद के पवित्र उत्सव जुड़ी हुई है। प्रेमचंद जी ने पूरी कहानी में मानव हृदय का भाव पूर्ण चित्रण किया है। कहानी की पृष्ठभूमि एक ग्रामीण क्षेत्र है। चलिए इस साहित्य के मायने को समझने के लिए एक–एक करके प्रत्येक पात्र पर दृष्टि डालते है।

कहानी में एक वात्सल्य पात्र है– अमीना दादी। यह पात्र समाज के एक नही वरन् कई भागों का प्रतीक बनके उभरता है। सबसे पहला एवं सबसे महत्वपूर्ण ममतामयी माँ का चरित्र। अमीना अपने बेटे एवं बहू को खो देने के बाद संसार में मात्र अपने इकलोते पोते के लिए जीवित है। ईद वाले दिन उसे अपने वस्त्र लंकारों या पेट की भूख

से अधिक हामिद के लिए मीठी सवैयों तथा उत्सव में अपनी दरिद्रता के कारण किसी इच्छा के पूरा ना हो पाने के दु:ख की चिंता होती है। उसका एक मात्र लक्ष्य हामिद को सभी दुखों से दूर रखकर खुशियों भरा जीवन देना है। इसी संदर्भ में वह ईद के लिए वह नाना प्रकार के प्रयासों से धन बचाती है।

हामिद के मेले में जाते समय उसका मन अपने पोते के नन्हे पाँवों में जूतों के अभाव के कारण छाले पड़ने के डर से तड़प उठता है। कहानी के अंत में जब हामिद उसके लिए चिमटा लाता है तब भी स्वयं के लिए उपयोगी वस्तुओं की खुशी से अधिक हामिद के त्याग को लेकर दु:ख होता हैं। यह पूरा प्रंसग एक ममतामयी माँ के हृदय को चित्रित करता हे। जो पूर्णत: निस्वार्थ भाव से अपनी संतान की एक मुस्कान के लिए सब कुछ न्यौछावर करने को तत्पर रहता हैं अमीना का पात्र समाज के वंचित तबके के पक्ष को भी सामने लाता है।

अपनी दरिद्रता के कारण अमीना मन में उठने वाली इच्छाओं का जिस प्रकार दमन करती है। अपने पोते को परिस्थितियों की भयावहता की असलियत से दूर रखने का प्रयास करती है तथा जिस स्तर की सहनशीलता का परिचय देती है ये सभी गुण यथार्थ में आज भी समाज के वंचित हिस्से में परिस्थितियों का सामना करते करते विकसित होते पाए गए है।

इसके साथ ही अमीना का पात्र हर व्यक्ति में एक बालमन के अस्तित्व को भी प्रकट करता है। जिस प्रकार अंत में अमीना हामिद को गले से लगाकर उस के स्नेह व त्याग के प्रति अपनी कृतज्ञता व प्रेम को प्रकट करती है, ऐसा लगता है मानो हामिद अमीना का चरित्र ही हो और बूढ़ी अमीना बालक बन गयी हो। अब एक दृष्टि हामिद के चरित्र पर भी डालते हैं। हामिद एक पवित्र हृदय, भोलेमन का पाँच वर्षीय बालक है।

यह मात्र आश्चर्यजनक रूप से इतनी कम आयु में भी मानवीय भावनाओं से परिपूर्ण, त्यागशील एवं गंभीर है। उसमें बाहरी आर्कषक वस्तुओं के आर्कषण से खुद को बचाए रखने की अद्‌भुत क्षमता है। वह परिस्थितियों से सामंजस्य बिठाने में सक्षम तथा आत्म संतोषी है। मेले में जाते समय उसकी बाल सुलभ उत्सुकता व बाहरी जगत से अनभिज्ञता मन को बरबस मोह लेती है। उसका अपने सुख की वस्तुओं का त्याग कर अपनी दादी के लिए चिमटा लाना ही कहानी का सबसे भावुक क्षण हैं।

कहानी के अन्य पात्र जैसे हामिद की मित्र मंडली के सदस्य भी कपट रहित बालमन के साथ मन को गुदगुदाते हैं। इस प्रकार यह कहानी आज से कई वर्षों पूर्व लिखी जाने के बाद भी आधुनिक काल में भी उतनी ही प्रासंगिक है।
क्योंकि समय व आयु बढ़ती रहती है किन्तु भावनाएँ कभी बूढ़ी नहीं होती। साहित्य की भाषा सरल व भावपूर्ण है। यह कहानी हमेशा से पाठकों की आँखें नम करती आई है और आगे भी करती रहेगी। ईदगाह देश, काल तथा भाषा से परे है। सच में 'ईदगाह' अमर है।

हेमंत शर्मा
आई.पी.जी. 2011

बेटियां

"सारा सितम सहन करती बेटियाँ।
दहेज की बलिदेवी पर चढ़ती बेटियाँ।।"

आज 21 वीं सदी में जहाँ लडकियाँ चाँद पर जा रही है और असमान छू रही हैं तथा कई क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा दिखा रही है, तो फिर भारत देश के कुछ परिवारों में लड़कियों पर रोक क्यों। क्यों उन्हे आगे बढ़ने से रोका जाता है। क्यों उनके सपने उनकी जुबाँ तक आने से पहले ही दिल में दफन कर दियें जाते है। हमारे आस पास के कई परिवारों में देखा जाता है कि लड़कियों को उच्च स्तर की पढ़ाई के लिये बाहर नहीं भेजा जाता है जिससे उनके अंदर की प्रतिभा भी खत्म हो जाती है। क्या लड़कियों को पढ़ने का कोई हक नहीं है। माना की माँ– बाप अपनी बेटियों को बाहर भेजने से डरते हैं लेकिन क्या आप अपने डर की वजह से अपनी बेटी के सपनों को कभी पूरा नहीं होने देते। हर लड़की की कुछ सोच होती है वह भी खुल के जीना चाहती है आसमान छूना चाहती है तो क्या गलत

है अगर नहीं तो फिर क्यो हम उसे घर की चार दीवारी में कैद रखना चाहते हैं। लड़की होना ही उसका जुर्म है। हर बेटी बेटे से कम नहीं है। आप यह कई क्षेत्रों में देख सकते है। सेना के क्षेत्र में जहाँ लड़कियाँ अपनी जान की बाजी लगाती है। डॉक्टर, इन्जीनियर और कई क्षेत्रों में लड़कियाँ लड़कों से आगे है यहाँ तक की भारत के राष्ट्रपति पद पर लड़कियाँ कार्यरत रह चुकी हैं।

अगर हम एक अच्छे कल की कल्पना करते हैं, तो हम हर लड़की को पढ़ने, आगे बढ़ने और खुल के जीने का अवसर देना ही होगा।

"सजा नहीं सपना होती है बेटियाँ
गैरों के बीच अपनी होती हैं बेटियाँ ॥"

रीना वर्मा,
आई.पी.जी. 2012

संस्मरण

एक साल पहले की बात है, मैं अपनी मम्मी के साथ रेल की यात्रा कर रही थी, लगभग आधे घंटे बाद हमारे डिब्बे में एक भिखारी आया जिसके घुटनों के नीचे वाले पैर नहीं थे उसे देखकर मम्मी को बहुत दया आई।

मम्मी ने उसको कुछ रूपये दिए उस भिखारी ने हमें खूब दुआएँ दी और आगे मेरे पास जो आंटी बैठी थी उनके पास गया उन्होंने उस भिखारी को कुछ भी नहीं दिया तो अचानक से वो इतना गुस्सा हो गया कि उसने आंटी को गाली देना शुरू कर दिया जैसे आपके बच्चे के दर्घटना में पैर कट जाये और ऐसी ही कुछ और बद्दुआयें देने लग गया। उसे देखकर मुझे यकीन नहीं हो रहा था कि जो अभी इतनी अच्छी दुआएँ दे रहा था, उसके मुहँ से बद्दुआयें निकल रही थी फिर बोला की उसके पास दो बंगले है और जब भी वो रेल से उतरता है तीन लोग उसे लेने आते है। उसकी बकवास सुनकर कुछ लोग बहुत गुस्सा हो गए यह देखकर भिखारी को लगा की अब यहाँ से जाना ही सही रहेगा और वो दरवाजे के पास चला गया फिर जब रेल रूकी तो भिखारी को लेने सच में तीन लोग आये। वो लोग बहुत अच्छे घर से लग रहे थे। मुझे लगा की जैसे वो भिखारी सच बोल रहा था। मुझे लगा कि जैसे सारे भिखारी झूठ बोलते हैं कि उन्होंने दो दिन से कुछ नहीं खाया है उस दिन के बाद मैं भिखारियों को कुछ भी नहीं देती थी।

उस घटना के कुछ दिनों बाद मैनें टी.वी. पर एक खबर देखी कि एक अनजान आदमी अस्पताल से एक छोटे बच्चे को ले गया ओर दिखा रहे थे कि उन लोगो का एक समूह होता है जो बच्चों को ले जाकर सात–आठ साल तक उनका पालन–पोषण करते हैं और फिर उन्हे भीख मांगने के लिए रेलों आदि में भेज देते हैं और भीख का जो पैसा मिलता है वो उनसे ले लिया जाता है तब मुझे लगा शायद उस रेल वाले भिखारी से भी वो लोग भीख मंगवा रहे हो जो उसे लेने आये थे और शायद तभी नही देने पर वो इतना गुस्सा हो गया हो। उस दिन के बाद में भिखारी खासतौर पर बच्ची को कुछ न कुछ जरूर देती हूँ क्योंकि क्या पता वो लोग किस वजह से भीख मांग रहे है। या तो सच में उनके पास खाने के लिए कुछ नहीं है। या फिर उनको कोई भीख मांगने के लिए बाध्य कर रहा।

अनुप्रिया कुमावत
आई.पी.जी. 2012

अधूरे सपने

हर सफर की कई मंजिल होती है पर कभी–कभी मंजिल तक पहुँचने की जल्दी में रास्ता खो जाता है और रास्ता ढूंढते–ढूंढते मंजिल गुम हो जाती है, एक ऐसा ही सफर मैंने शुरू किया उस चमकती सुबह को–

मैं जब कक्षा एक में था तब एक दिन एक नई लड़की का मेरी क्लास में प्रवेश हुआ। उसका नाम प्रियांशी था। वैसे तो उस समय मैं बहुत छोटा था लेकिन ना जाने क्यों वो मुझे बहुत अच्छी लगती थी। मैं उसके साथ खेलता था मेरा मतलब था हमेशा उसी के साथ रहना चाहता था। फिर हम लोग धीरे–धीरे आगे पढ़ाई करते गए। मै लड़की के मामले में एकदम कमजोर हूँ। किसी लड़की से अगर बात करनी हो तो मेरे पसीने छूटने लगते थे वैसे मेरे क्लास में बहुत सारी लड़कियाँ थी, लेकिन मैं हमेशा

उनसे लड़ता रहता था। केवल एक प्रियांशी के सामने भीगी बिल्ली बन जाता। मैं जब क्लास में बैठा होता तो उसी को देखता। उसका चेहरा बहुत मासूम था। लेकिन थी बहुत शरारती। पढ़ने में भी तेज थी। टाइम बीतता गया हम लोग कक्षा 5 में आये। मैं हमेशा उससे अपने दिल की बात कहना चाहता था लेकिन बहुत डरता था। वैसे मेरे बाकी सहपाठी भी उसे बहुत पसंद करते थे।

सिलसिला चलता रहा। मैने किताब में छोटा छेद बना लिया था जिनके अन्दर से उसे हमेशा देखता रहता। ऐसा काई पल नही था जब मैं उसके बारे में नहीं सोचता था। फिर हम कक्षा 6 में थे। मैं कभी क्लास नहीं छोड़ता था फिर एक दिन मुझे ये पता चला कि उसके पापा का तबादला हो गया है और वो जा रही है उस दिन मेरी और उसकी अंतिम मुलाकात थी मैंने उससे बात नहीं की। वो अपने दोस्त को अलविदा कह रही थी और मैं अंतिम बेंच पर बैठ कर रो रहा था, तभी वो मेरे पास आई और कहा मैं जा रही हूँ। मैंने देखा उसकी भी आँखे भीगी हुई थी और वो चली गयी लेकिन उसकी यादें आज भी मुझे तड़पाती है। उसका चेहरा हमेशा आँखों के सामने रहता है।

कई साल बीत गए। वो शायद मेरी जिन्दगी से जा चुकी थी। पर यादों में अब भी वो ही है। मैं अब कॉलेज में हूँ एकदम चुप–चाप और गुमसुम सा रहने वाला लड़का, लड़की का पहला दिन और मेरी मुलाकात एक नई लड़की से हुई। जब मैंने उसको पहली बार देखा तो उसका चेहरा मुझे याद दिलाने लगा। मैंने बहुत कोशिश की कि मैं उसके पास न जाऊँ, उससे बात न करूँ पर पता नहीं मेरे कदम अपने आप ही उस की तरफ बढ़ने लगे शायद इस आस के साथ कि वो मेरी वही दोस्त हो। उसका नाम पिया था। मैं निराश हो गया। जब तक वो मेरा नाम पूछती तब तक मैं वहां से जा चुका था। अब तो मुझे प्रियांशी की और भी याद आने लगी थी। वो एक ऐसी लड़की थी जिसे शायद मैं कभी नहीं भुला सकता।

दिन बीतने लगे। मेरे कॉलेज में एक पत्रिका सम्पादित होने वाली थी। जिसके लिए सब को कुछ न कुछ अच्छा लिखना था। कुछ समय बाद वो पत्रिका सम्पादित हुई, जब मैंने वो पत्रिका पढ़ी तो उसके पहले पन्ने पर वही सब कुछ लिखा था जो शायद मैं लिखना चाहता था मुझे विश्वास नहीं हुआ उस कहानी में सिर्फ एक चीज अलग थी और वह थी कि उस कहानी में लड़की की थी पिया, मेरी प्रियांशी। मुझे ऐसा महसूस हुआ की मैं इस वक्त सातवें आसमान पर हूँ सब कुछ बदल गया था रंग चमकीले लगने लगे थे फूल प्यारे लगने लगे थे, जिन्दगी में अब कोई अधूरापन बाकी नहीं रह गया था बस अब सिर्फ एक ही चीज का इंतजार था जिसके बाद शायद मेरी जिन्दगी हमेशा के लिए बदल जाती अब सिर्फ मैं उसे बताना चाहता था। मैंने पिया से दोस्ती की हम लोग बाते करते थे। एक दूसरे के साथ समय बिताते थे। सच कहूं तो बस अब इंतजार घड़ी की सुइयों की तरह था, जो धीरे–धीरे करके निकल रहा था।

वो मेरी जिन्दगी का सबसे खुश नसीब दिन था। मैंने उसे कॉलेज के बाहर बुलाया तो वो बाहर आई। उस दिन वो बहुत ही सुन्दर लग रही थी, मैं और वो सड़क के विपरीत किनारों पर खड़े थे पर शायद अब वो विपरीत किनारे मिलने वाले थे। एक दुसरे से हमेशा के लिए जुड़ने वाले थे। पर मुझे पता नहीं था कि मेरी खुशियाँ सिर्फ दो पल की ही मेहमान हैं वो जब सड़क पार कर रही थी तब सामने से आती हुई गाड़ी ने उसे टक्कर मार दी, वो उछल कर दूर जा गिरी उसके सर से खून बह रहा था, ये सब इतना जल्दी हुआ कि मैं खुद को संभाल नहीं पाया। जब तक मैं होश में आया तब तक उसे अस्पताल में भर्ती किया जा चुका था।

मैं वहां उससे मिलने गया। उसे अन्दर ले जाया जा रहा था और वो बेहोशी की हालत में मेरा नाम पुकार रही थी उसने मेरी तरफ हाथ बढ़ाया और मैने दौड़कर उसका हाथ पकड़ लिया उसने कहा कि "पता है मैंने तुम्हारा हाथ क्यूँ पकड़ा क्योकि में हमेशा से तुम्हारा हाथ थामें रहना चाहती थी और मेरी खुश नसीबी देखो–तुम्हारा हाथ थामें ही मैं इस दुनिया से जा रही हूँ मैं कॉलेज के पहले दिन से ही जानती थी कि तुम वही हो। आज मेरी जिन्दगी सही मायनों में तुमसे जुड़ गयी हूँ मैं आज बहुत खुश हूँ बहुत–बहुत ज्यादा खुश" और इतना कहते ही उसका हाथ मेरे हाथ से फिसल गया वो जा चुकी थी मुझे

छोड़कर मैं रो भी नही पाया–उसकी याद मुझे तड़पाने लगी थी जीना भूल गया था मैं जिन्दगी में फिर से वही अधूरापन लौट आया। आज मैंने सोच लिया कि अब मेरे जीने का कोई मतलब नही है इसलिए मैं जा रहा हूँ–हमेशा के लिए अपनी पिया के पास।
राघव और पिया की ये कहानी राघव ने अपनी डायरी में लिखी थी जो उसकी सड़क दुर्घटना के बाद से मेरे पास है। जब उसकी मृत्यु हुई मैं वहां पास से ही निकल रही थी और जब मैं उसे अस्पताल लेकर गयी तब उसने ये डायरी मुझे पकड़ा दी। वो अब इस दुनिया में नही है लेकिन शायद वो प्यार अभी भी है इस दुनिया के किसी न किसी कोने में, कहीं न कहीं वो प्यार जिंदा है।

निकिता
आई.पी.जी. 2012

मिट्टी का तेल

आज भी मन ही मन मुस्कुरा जाता हूँ, जब मम्मी के सुनाये उनके जीवन के कुछ वृतांत याद आते हैं। मेरा भाई उस समय करीब 2 साल का था। दीपावली के समीप आने पर घर की सफाई एवं रंग रोगन का काम चल रहा था। प्रतिदिन रंग– रोगन का काम खत्म होने पर वो नर्सिपोतने के ब्रश को मिट्टी के तेल में डाल दिया जाता था। एक दिन मिट्टी के तेल के खत्म होने पर मेरी मम्मी ने कर्मचारी से मिट्टी का तेल लाने को कहा।

मेरा भाई भी यह बात सुन रहा था। वह छत पर रखे गमले की मिटटी को पानी में धोल कर लाया और बोला "मम्मा। ये लो मिट्टी का तेल"। उसकी इस हरकत पर पापा ने मुस्कुराकर उसे गोद में लिया और बोले "मेरा बेटा बड़ा होकर वैज्ञानिक बनेगा"। आज वह आई.आई.टी बॉम्बे से बीटेक. डिग्री प्राप्त कर चुका है। किसी ने सच ही कहा है पूत के पाँव पालने दिखने लगते हैं। आज भी यह कहावत मम्मी के सुनाये वृतांत की याद ताजाकर एक सुखद सी याद दे जाती है।

प्रियम बजाज
आई.पी.जी. 2010

सिंह "एक पहचान"

धर्म, यह वो बिंदु है जिसके इर्द–गिर्द हमारा संपूर्ण सामाजिक तानाबाना गया है। हम सभी का कोई ना कोई धर्म होता है जो प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से हमारी पहचान को निखार देता है। यहाँ पर धर्म से हमारा आशय हमारी आध्यात्मिक तौर–तरीको से है जो एक मनुष्य को मानवता प्राप्त करने के लिए अत्यंत आवश्यक है।

सभी धर्मों की अपनी पारस्परिक वेशभूषा एवं रीतियाँ होती है। जिनका सम्पूर्ण भारत में हर जगह पूरा सम्मान किया जाता है। यह कथाएं एक सिख युवक जसमीत की है जो अभियांत्रिकी के तृतीय वर्ष अध्यनरत है। जसमीत अपनी सहपाठिका सिमरन जीत कौर से प्रेम करता था किन्तु कभी अपने हृदय की बातें उसने अपने होठों तक नहीं पहुँचने दी। बात यह न थी कि उसने प्रयास नहीं किया लेकिन हमेशा उसका मनोबल उसे अपनी बात व्यक्त करवा पाने में असफल ही रहा।

आज वह दिन था जब जसमीत अपनी सारी हिम्मत बांधकर सिमरन को अपना प्रेम अभिव्यक्त करने हेतु बुलाया था। सिमरन के बुलाने का कारण पूछने पर जसमीत संकोच वश कुछ न कह सका, फलस्वरूप सिरमन वहाँ से जाने लगी। आखिरी क्षण में अपना सारा साहस बटोरकर जसमीत ने अन्ततः सिमरन को सारी बात बता दी। सब सुनने के बाद आश्चर्यचकित सिमरन ने जसमीत को समझाते हुए कहा कि वह एक अच्छा लड़का है पर वह उसे पसंद नहीं करती।

अपने आपको एक वरिष्ठ पगड़ीधारी सिख जानकर जसमीत ने तपाक से पूछा की क्या कमी है उसमें। इस पर सिमरन ने कहा जसमीत तुम एक अच्छे लडके हो सकते हो पर मुझे कोई ऐसा लड़का चाहिए जो अपने व्यक्तिव, अपने बालों और अपने अंदाज से मुझे रिझाले। नाकि तुम जैसा लड़का जिसने कभी अपने बालों तक पे ध्यान नहीं दिया।

इस घटना से अत्यंत निराश जसमीत अपने घर वापस चला जाता है और बंद कमरे में एकांत में अंतर रूदन का

सामना कर रहा होता है। उसे पल–पल यह प्रतीत होने लगता है कि एक पगड़ीधारी सिख होना उसक लिये एक श्राप बन गया है। इस मानसिक उधेड़ बुन से व्याकुल होकर वह एक ऐसा कदम उठा लेता है जिसके बारे में वह कभी सोच भी नहीं सकता था। थोड़ी देर बाद वह अपने परिवारजनों का सामना करता है तो उसके माता–पिता उसका ये बदला हुआ रूप देखकर दंग रह जाते है।

उनकी हर आवाज में एक दर्द था और एक प्रश्न था कि किस बात ने उसे ऐसा गंभीर कदम उठाने पर विवश कर दिया। बहुत देर तक बुत की भांति खड़े रहने के बाद अचानक जसमीत गरजते हुऐ स्वर में कह उठा, यह चीज थी जो मुझे समाज के दुसरे आम लोगों से अलग करती थी, आज मैंने उसे ही मिटा दिया। इस पर जसमीत की माँ फूट पड़ी, यह तो हमारे गुरूजी का अशीर्वाद था, हमारी पहचान, हमारा गुरूर, आज तुने वो सब खत्म कर दिया। जसमीत को फिर अपनी गलती का अहसास नहीं हुआ अंततः जसमीत के पिता एक कठोर निर्णय लेने के लिए विवश हो गए और उन्होने जसमीत को हमेशा के लिए घर से निकाल दिया।

आज जसमीन अपने मित्रों के साथ था, अपने निर्णय से खुश जीवन का आनंद लेता हुआ। अब उसके दोस्तों ने उसे फिर से अपने प्रेम को पाने का प्रयत्न करने के लिए प्रोत्साहित किया जिसके फलस्वरूप जसमीत के हदय में प्यार का दीप फिर जल उठा। इस बार उसे विश्वास था के सिमरन उनका प्रेम जरूर समझेगी और इसीलिए वह महाविद्यालय के उद्घाटन में उसकी प्रतीक्षा करने लगा वह नहीं आई। उसे न आता देख जसमीत व्याकुल हो रहा था पर किसी को उसके न आने का कारण नहीं पता था।

आज इंतजार का चौथा दिन था, तभी उसकी नजर सिमरन पर पड़ी जो अपनी सहेलियों के साथ आ रही थी। सिमरन को देखकर जसमीत दंग रहा गया क्योंकि इस एक हफ्ते में सिमरन का कायापलट हो चुका था, हमेशा जींस–टॉप पहनने वाली सिमरन आज सिख धर्म की पारंपरिक वेश–भूषा में थी, ढका हुआ सर और नीची पलकें लिये वो कक्ष में दाखिल हो रही थी। ऐसी घड़ी में आश्चर्यचकित जसमीत वहां से बिना कुछ कहे चल दिया, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि सिमरन में यह बदलाव आये कैसे।

इस गुत्थी को सुलझाने के लिए जसमीत आज गुरूद्वारे आ पंहुचा था। गुरूद्वारे पे जसमीत ने सिमरन को देखा जो पूरे सेवाभाव से वहाँ सीढ़ियों को साफ कर रही थी। जसमीत वहीं खड़ा रहा और उसे निहारता रहा जिस बात से सिमरन बिलकुल बेखबर थी। थोड़ी ही देर में दोनों का आमना सामना होता है जिससे सिमरन जसमीत को इस रूप में देखकर स्तब्ध रह जाती है।

सिमरन ने हैरान होकर पूछा, जसमीत ये तुने क्या कर लिया? इस पर जसमीत ने कहा, यही तो तुम चाहती थी सिमरन, तुम्हें खुश होना चाहिए। इस पर सिमरन मौन रही, आगे जसमीत ने कहा, तुम्हें क्या हो गया है सिमरन? तुम में अचानक इतनी धार्मिक आस्था कैसे जाग उठी? अब सिमरन की आँखें नम थी और लड़खड़ाती हुई आवाज में उसने अपनी आपबीती सुनानी शुरू की, "जसमीत, जिस दिन तुमने मुझसे अपने दिल की बात की थी उसी दिन कुछ गुंड़ो ने मेरे साथ छेड़खानी करने की कोशिश की, मेरी मदद की गुहार लगाने पर मुझे बचा लिया वरना तुम सोच सकते हो मेरा क्या होता''।

सिमरन आगे कहती है, "उस दिन मुझे यह अहसास हुआ कि दूसरों की जान बचाने के लिए अपनी जान की परवाह नहीं करते, कभी अन्याय के सामने सिर नहीं झुकाते, शायद इसलिए हमें सिंह यानि शेर की उपाधि दी गयी है, तुम बहुत खुश नसीब हो जो तुम एक सिख हो, कभी अपनी पहचान मत खोना"।

यह सब सुनकर जसमीत की आँखे भर आती है ओर वो बिना कुछ कहे लौट आता है उसे अपने किए पर बहुत पश्चाताप होता है और अपने घर जाकर अपने माता–पिता से क्षमा मांगता है। जो बाल उसने कटवा दिए थे उन्हें वो सतलज नदी में विसर्जित कर देता है और पुनः सिखों की वेश–भूषा, नियम–कर्म का पालन करने लगता है।

सच्चित बंसल
आई.पी.जी. 2010

परिस्थितियाँ

यह समय भारत वर्ष के इतिहास का स्वर्णयुग था। मालवा के राजा वीरसिंह का प्रताप समस्त दिशाओं में व्याप्त था। उनके शौर्य की सीमा न थी। उनके गुणों के कारण उनके शत्रु भी खुले हृदय से उनके प्रशंसक थे । महाराजा स्वयं तो गुणी थे ही, साथ ही गुणवानों का सम्मान भी करते थे। उनके दरबार में एक से एक योद्धा, कवि, चित्रकार सदा उपस्थित रहते थे। किन्तु महाराज उनमे से जिनका सर्वाधिक सम्मान करते थे वे चित्रकला के विशेषज्ञ चित्रसेन।

चित्रसेन की कला का हर कोई कायल था, उनके चित्र तो मानों बोलते थे। एक बार की बात है – महाराजा वीरसिंह ने चित्रसेन को आज्ञा दी कि आप हमारे लिए दो चित्र बनाइए– एक चित्र दुनिया के सबसे मासूम चेहरे का और दूसरा संसार के सबसे क्रूर चेहरे का। अगले ही दिन चित्रसेन अपने चित्रों के लिए चेहरा ढूढँने निकल पडें।

वे कई लोगो से मिले , कई शहरों में घूमें परन्तु उन्हें वह चेहरा नहीं मिला, जिसकी खोज में वे थे। लगभग दो माह के बाद शाम को एक गाँव से गुजरते वक्त उनकी नजर धूल में खेलते हुए एक छोटे बच्चे पर पड़ी, उन्हें लगा कि उनकी खोज समाप्त हो गयी है। उससे मासूम चेहरा न तो उन्होंने देखा था न ही देखने की उम्मीद थी। अगले ही दिन उन्होंने महाराज के सम्मुख उस बालक का चित्र प्रस्तुत किया। महाराज मुग्ध हो उठे और चित्रसेन को एक लाख स्वर्ण मुद्राएं दी किन्तु कह उठे, "चित्रसेन अभी तक आपने हमारा आधा काम किया है, अभी तो आपको एक और चित्र बनाना है।"

चित्रसेन को महाराज कि बात लग गयी और वे अगले दिन ही संसार के सबसे क्रूर चेहरे को देखने चल पड़े। चित्रसेन ने हर गाँव, हर शहर छान मारा, लाखों कोशिश की, यहाँ तक कि कल्पना से भी चित्र बनाने कि कोशिश कि किन्तु चेहरे पर वो भाव न मिलें जिनकी उन्हें खोज थी।

समय बितता गया पर वो अपना दूसरा चित्र न बना सके। वर्षों बाद एक दिन उन्होंने महाराज से निवेदन किया, "महाराज मैने संसार का हर कोना देख लिया, पर मुझे वो चहेरा नहीं मिला, जो मैं संसार का क्रूरतम चेहरा कहकर आपके समक्ष प्रस्तुत कर सकूँ। अतः आखिरी बार राज कारागार में जाकर कैदियों को देखना चाहता हूँ।''

महाराज ने स्वीकृति दे दी। अगले ही दिन वे कारगार गये और वहां के सबसे खूंखार कैदियों को देखने कि इच्छा प्रकट की। उन्होंने एक के बाद एक कई चेहरे देखे पर एक चेहरे पर जाकर उनकी नजरें अटक गयीं। उस चेहरे से टपकती थी तो सिर्फ क्रूरता और आँखों से दरिंदगी। चित्रसेन की तलाश पूरी हुई।

वे अपना सामान रखकर उसका चित्र बनाने लगे। वे अपना चित्र बनाने में व्यस्त थे, और वह कैदी वर्षों पहले बनाये गये चित्र को देख रहा था, किन्तु अचानक वह फूट फूट कर रोने लगा। चित्रसेन इसका कारण न समझ पाए। वे उससे पूछ उठे की वह क्यों रो रहा है? उसने बताया की चित्र का मासूम बालक वह स्वयं है, जो आज उनके सामने इतने क्रूर रूप में है।

चित्रसेन हतप्रभ रह गये। उन्होंने आश्चर्य से उसकी कहानी पूछी, वे जानना चाहता थें कि आखिर वह कौन सा कारण था जिसने उसे इतना बदल दिया। किन्तु वह एक शब्द के अलावा कुछ न बोल सका, "परिस्थितियाँ"।

शुभम अग्रवाल
आई.पी.जी. 2011

मानवता की हत्या

हमारे जीवन में कभी–कभी ऐसी घटनायें घट जाती हैं, जिन्हें हम कभी भूल नहीं पाते। ऐसी ही एक घटना मेरे जीवन की भी है जब मैं जालंधर रेलवे स्टेशन पर आम प्रतीक्षा हॉल (क्योंकि स्टेशन पर कोई प्रतीक्षालय नहीं था) में अपनी ट्रेन के आने का इन्तजार कर रहा था। वहाँ पर कुछ ही स्थान खाली थे, जिनमें से एक स्थान पंखे के पास था परन्तु वह इसलिए था क्योंकि उसके पास एक

बुजुर्ग महिला बैठी हुई थी।

वह पंजाबी या किसी और भाषा में कुछ बोले जा रही थी, और जिस तरह से लोग उसकी बातों को सुनकर प्रतिक्रिया कर रहे थे मुझे लगा कि वह कोई भिखारी है या मानसिक रूप से परेशान है, परन्तु मैं उस स्थान पर बैठ गया। पहले 10 मिनट तक मैंने उसे नजरंदाज किया परन्तु फिर मैं नहीं कर सका, तब मैं उसकी बातों को सुनने और समझने की कोशिश करने लगा।

मैंने पूरी कोशिश की उसकी बातों को समझने की पर इतना ही समझ सका कि वो सिर्फ एक भिखारी नहीं है। मैने उससे कहा कि मैं आपकी भाषा समझ नहीं पा रहा हूँ और जैसे ही मैंने उससे ये कहा, उसने तुरंत कहा –"दूध, मिल्क....आई वांट मिल्क", मैं उसके शब्द सुन कर दंग रह गया। वह महिला करीब 60 वर्ष की लग रही थी और अंग्रेजी बोल रही थी, तो मैंने सोचा कि या तो वह इसाई है या अच्छी पढ़ी लिखी है या पर्यटकों के कारण उसे कुछ अंग्रेजी शब्द याद हो गए होंगे।

मैं दूध लाने के लिए सहमत हो गया लेकिन मैंने उससे पूछा कि मेरे सामान का ध्यान कौन रखेगा तो उसने फिर से मुझे चौंकाने वाले शब्द बोले "गोड सब को प्रोटेक्ट करते है ही, ऑल्वेस ही कीप्स हिस चिल्ड्रन सेफ''। मैने अपना लैपटोप वाला बैग साथ लिया और सोचा कि कपड़ों का बैग कोई ले भी जाता है, तो कोई बड़ा नुकसान नहीं होगा इसलिए अपना कपड़ों का बैग कुर्सी के नीचे रखा दिया क्योंकि यह जोखिम लिया जा सकता था।

मैं अपनी कुर्सी से जाने के लिए जैसे ही उठा उसने 10 रूपये का नोट मेरे हाथ में दिया और मुझे निर्देश दिया कि स्टेशन के बाहर निकलने के बाद दाहिने हाथ पर नौवीं दुकान वाले दुकानदार को पता होगा कि मुझे दूध चाहिए और मैं उसे ये 10 रूपये का नोट देकर दूध ले लूं। मैंने हाँ में सिर हिलाया और चला गया जब तक मैं दुकान तक नहीं पहुचा मैं अपने बैग के बारे में ही सोच रहा था, और ये भी सोच रहा था कि महिला वहाँ क्यूँ थी और क्यूँ उस की बात पर कोई ध्यान नहीं दे रहा था।

जैसे ही मैं दुकान पर पहुचा और दुकानदार इस बात पर सहमत हुआ कि वहाँ एक वृद्ध महिला है जो प्रति दिन दूध खरीदती है, लेकिन खुद कभी भी नहीं आयी, वह हमेशा किसी को दूध लाने भेजती है। मैं थोड़ा सतुष्ट था। मैं वापस आया और कुछ भी नहीं बदला था, मेरा बैग वहा था और सब कुछ पहले जैसा ही था। मैंने उसे दूध दिया और वह खुश थी।

लेकिन कहानी यही खत्म नही होती। वास्तव में यह यहाँ शुरू होती है। मैं तुम्हें विश्राम दूँगा, लेकिन अभी मुझे बस ये बताओं, तुम्हें क्या लगता है कि अन्य लोगों ने उस औरत को अनदेखा क्यूँ किया हेागा। भारत में लोग अभी भी उनके जीवन में व्यस्त होने का दिखावा करते है। वे इतना दिखावा करते है कि वे खुद नहीं समझ पाते कि वे व्यस्त है।

दीपक शर्मा
आई.पी.जी. 2010

संस्थान के उत्सव

इन्फोत्सव

इन्फोत्सव, संस्थान का वार्षिक प्रौद्योगिकी एंव प्रबंधन महोत्सव है। इस महोत्सव में संस्थान की भावना, रचनात्मकता, नेतृत्वता और उत्कृष्टता को बड़े ही आकर्षक तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। महोत्सव में प्रायोजकों और प्रतिभागियों के रूप में बड़े संस्थान एंव संगठन शामिल हैं। उत्कृष्टता एंव ज्ञान को धनराशी एंव स्मृति चिन्ह से पुरस्कृत किया जाता है।

ऑरोरा

ऑरोरा, वार्षिक सांस्कृतिक उत्सव है जो सहकर्म की भावना से मनाया जाता है। यह तीन दिवसीय उत्सव , शानदार आयोजनों के साथ चिह्नित है, जिसमे नई पीढ़ी का उत्साह और जोश झलकता है। इस उत्सव के प्रमुख आकर्षण – व्यक्तित्व प्रतियोगिता,परिवेश (भारतीय पोशाक में फैशन शो), कवि सम्मेलन, अन्ताक्षरी, नृत्य, गायन प्रतियोगिता आदि है।

उर्जा

उर्जा– संस्थान द्वारा आयोजित एंव छात्रों द्वारा सम्भागित खेल उत्सव है। इसके अंतर्गत चार विभिन्न समूह–रेड, ब्लू, व्हाईट, ग्रीन के बीच खेल प्रतिस्पर्धा का आयोजन होता है। उर्जा संस्थान के सभी प्रतिभाशली छात्रों को दिमागी और शारीरिक खेलों में भाग लेने और प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक अवसर प्रदान करती है।

त्वरण

त्वरण–एक अंतर्संस्थान उत्सव है। खेल हमेशा ही महिमा, शोहरत और गर्व जैसे शब्दों के साथ सम्बंधित रहा है। शारीरिक प्रयासों के रूप में पायी गयी उपलब्धियां देश में बहुमूल्य मानी जाती है। त्वरण आई आई आई टी के प्रतिभाशाली छात्रों को दिमागी और शारीरिक खेलों में भाग लेने और प्रतिस्पर्धा करने के लिए एक अवसर प्रदान करता है।

विद्यार्थियों द्वारा कार्यरत समूह

छात्र गतिविधि परिषद

छात्र गतिविधि परिषद संस्था में शैक्षिक प्रगति सुनिश्चित करने का प्रयास है। इसके अंतर्गत छात्र समुदाय के प्रतिनिधि संस्था के कार्यकर्ता के रूप में मौलिक कार्य, जैसे– अधिकारियों को विधिवत छात्रों की आवश्यकताओं से अवगत करवना, विभिन्न महोत्सवो को एक साधन– संपन्न मंच देना, आदि करते है। यह समग्र विकास को संयोजित करने का माध्यम है।

ए.ए.एस.एफ

अभिज्ञान अभिकौशलम् छात्र फोरम हमारे संस्थान के सबसे सक्रिय छात्र मंचों में से एक है। यह सहकर्मी शिक्षा का उत्कृष्ट उदहारण हैं। इसकी शिक्षा का प्रमुख केंद्र प्रथम वर्ष के छात्र – छात्रायें हैं । छात्रों को तकनीकी और प्रबंधकीय ज्ञान प्रदान करने के लिए विभिन्न कार्यशाला, सत्र, हाई–क्यू आदि आयोजित किये जोते हैं।

ई–सेल

ई–सेल उद्यमिता प्रकोष्ठ एक ऐसा केंद्र है जो की युवाओं में छिपे उद्यमी को प्रोत्साहित कर सशक्त बनाता है। यह रचनात्मक उद्यमी, (अर्थात– जो हर विषम परिस्थिति का संश्लेषण कर उन पर सफलपूर्वक विजय प्राप्त करने के लिए एक नये रास्तों की कल्पना करते हैं), के लिए व्यवसाय प्रणाली को जानने का मार्ग हैं।

उत्थान

उत्थान हमारे संस्थान का पत्रकारिका समूह है। यह संस्थान में आयोजित होने वाले कार्यक्रम को कवर करता है तथा संस्थान में आए अतिथिगणों तथा एच. आर. का साक्षात्कार करता है।

ज्ञानधारा

शासकीय/अर्द्ध शासकीय विद्यालय (केन्द्र सरकार व म.प्र. सरकार) के कक्षा 8 से 12 वीं तक के छात्र–छात्राओं को कार्यक्रम में लिया जाता है। ग्रामीण और शहरी छात्रों में पहले ग्रामीण विद्यालय के बच्चों को प्राथमिकता दी जाती है। एक बार में केवल दो विद्यालय के छात्र/छात्राओं को आमंत्रित किया जाता है। प्रशिक्षण के दौरान कम्प्यूटर के विभिन्न भागो से परिचित कराया जाता है तथा हार्डवेयर एंव सॉफ्टवेयर दोनों तरह की जानकारी प्रदान की जाती है।

माथे की बिंदी है हिन्दी

संस्कृत की एक लाड़ली बेटी है ये हिन्दी,
बहनों को साथ लेकर चलती है ये हिन्दी।

सुंदर है, मनोरम है, मीठी है, सरल है,
ओजस्विनी है और अनूठी है ये हिन्दी।

पाथेय है, प्रवास में, परिचय का सूत्र है,
मैत्री को जोड़ने की सांकल है ये हिन्दी।

पढ़ने व पढ़ाने मे सहज है ये सुगम है,
साहित्य का असीम सागर है ये हिन्दी।

तुलसी, कबीर, मीरा ने इसमें ही लिखा है,
कवि सूर के सागर की गागर है ये हिन्दी।

वागेश्वरी का माथे पर वरदहस्त है,
निश्चय ही वंदनीय मां-सम है ये हिन्दी।

अंग्रजी से भी इसका कोई बैर नहीं है,
उसकों भी अपनेपन से लुभाती है ये हिन्दी।

यूँ तो देश में कई भाषाएं और हैं,
पर राष्ट्र के माथे की बिंदी है ये हिन्दी।

नवीन संगतानी
आई.पी.जी. 2012

जिन्दगी

एक दिन यूं ही बैठे-बैठे,
मेरे मन में एक विचार कौंधा,
कि आखिर ये जिन्दगी है क्या ?
एक सफर, एक संघर्ष या एक नशा।

बचपन में, हम जब नन्हें- नाजुक होते हैं,
दूसरों की अपेक्षाऐं, अपने कन्धे ढ़ोते है,
कहने को तो ये सपने होते है हमारे, क्योंकि
तब अपना अस्तित्व ही नही जानते हम बेचारे।

भूत-भविष्य की चिन्ता में,
भूला देते हैं वर्तमान को,
शायद दूसरों के लिए जीना ही इन्सानियत है,
खुद के लिये तो चन्द पल भी मुनासिब नहीं
इन्सान को।

उम्र बढ़ी, जिम्मेदारिया, बढ़ी
और बढ़ी दर्द सहने की क्षमता,
जल-प्रलय की इस धारा में,
एक सूखा तना आखिर कब तक थमता?
मुझे नहीं है सच का ज्ञान,
ना है सही-गलत की पहचान,
तभी तो आप सब से पूछता हूँ,
इसी ऊठापटक में जूझता हूँ,
कि आखिर ये जिन्दगी है क्या,
सफर, संघर्ष या एक नशा।

शायद आप कहें सफर,
और कहें भी क्यूं ना,
आखिर आपकी हर जरुरत,
तो क्षणभर में पूरी होती है,
पीड़ा तो उन्होंने झेली है,
जिनका भाग्य उन पर रोता है,
सघंर्ष है जिन्दगी उसके लिए,
जिसने हर पल कष्ट झेला है,
चक्रवात तो गुजर चुका,
अब खड़ा ये वृक्ष अकेला है ।

जब मौत के मुहं में खुद को पाया ,
तब जाके, मुझको याद आया,
कि जीने की अब लत है लग गई ,
आंखों में अन्धेरा छा गया,
बीता हर लम्हा याद आ गया,
चन्द-और पल मैं जीना चाहता था,
साकि के प्याले से पीना चाहता था,
तब जाके ये यकीन हो गया, कि
ना है सफर, ना ही संघर्ष, है तो बस नशा॥

स्मित कुमार
आई.पी.जी. 2012

कभी–कभी

कभी पहली बार स्कूल जाने में डर लगता था
आज अकेले ही दुनिया घूम लेते है॥

पहले रोज नंबर लाने के लिए पढ़ते थे,
आज कमाने के लिए पढ़ते हैं॥

गरीब दूर तक चलता हैं, खाना खाने के लिए
अमीर दूर तक चलता हैं, खाना पचाने के लिए॥

किसी के पास खाने के लिये एक वक्त की रोटी नहीं है
किसी के पास रोटी खाने के लिए वक्त नहीं है॥

कोई लाचार है इसलिए बीमार है,
कोई बीमार है इस लिये लाचार है॥

कोई अपनों के लिए रोटी छोड देता है,
कोई रोटी के लिए अपनों को छोड़ देता है॥
ये दुनिया भी कितनी निराली है,
कभी वक्त मिले तो सोचना॥
कभी छोटी सी चोट लगने पे रोते थे,
आज दिल टूट जाने पर भी संभल जाते है॥

पहले हम दोस्तों के सहारे रहते थे,
आज दोस्तों की यादों में रहते हैं॥

पहले लड़ना मारना रोज का काम था,
आज एक बार लड़ते हें तो रिश्ते खो जाते हैं॥

सच में जिन्दगी ने बहुत कुछ सिखा दिया,
कब हम को इतना बड़ा बना दिया॥

विनायक अग्रवाल
आई.पी.जी. 2012

उलझने

मन की हर व्यथा के पीछे छोटी सी कथा,
न जाने कब मिलेगा मुझे मेहनत की सिला।
मै मेहनत करती गई, उलझने बढ़ती गई,
एक ख्याब देखा, जो अब तक पूरा न हुआ।
सिर्फ आश्वासन मिला, प्रोत्साहन
का इंतजार अब भी न था।

आशाओं से भरी आंखे विश्वास से भरा मन,
जब भी जाती हूँ सफलता पाने के लिए प्रयास की ओर,
ये उलझा मन स्वतः ही वापस आ जाता है और
अगला प्रयास एक नई उलझन छोड़ जाता है।
विश्वास है मुझे एक दिन मैं इस उलझन से निकल जाऊंगी,
उस भागती हुई सफलता को अवश्य पकड़ पाऊंगी।

डॉ. एकता सकवार
सचिव, राजभाषा हिन्दी समिति

नाविक धीरे धीरे जाना

धीरे धीरे जाना, नाविक धीरे धीरे जाना,
मानव जीवन में दुःख पलता देख नही घबराना,
जीवन की यह रीत पुरानी,
जिसने अपने मन की मानी ,
पड़ गयी उसको मुंह की खानी,
दिल में दर्द, आंखों में पानी,
बस इतनी है मेरी कहानी,
इसको तुम ना दोहराना,
नाविक धीरे धीरे जाना।

भावनाओं का एक तुफान था आया,
पतवार किसी का बच ना पाया,
जीवन की यह अद्भुत माया,
अपनों ने ही मुझे गिराया,
मैंने यह सब तुमको बतलाया,

तुम ना किसी को गिराना,
नाविक धीरे धीरे जाना।

कोई थी जिसे मैं अपनाना चाहता था,
कुछ बातें दिल की बताना चाहता था,
पर चाहत ये मेरी अधूरी रह गई,
भरे बाजार में वह कुछ ऐसा कह गई,
जीवन का यह कटु सत्य है,
तुम ना किसी को अपनाना,
नाविक धीरे धीरे जाना।

इन कष्टप्रद अनुभवों के बाद,
किसी से कुछ अब और ना कहना,
बस करो अब बहुत हो चुका,
दु:ख, मुझको अब और ना सहना,
प्रेमरूपी भंवर से बचकर, बेड़ा पार लगाना,
नाविक धीरे धीरे जाना।

स्मित कुमार
आई.पी.जी. 2012

एक फूल की चाह

उद्वेलित कर अश्रु–राशियाँ,
हृदय–चिताएँ धधक कर।

महा महामारी प्रचण्ड हो
फैल रही थी इधर उधर।
क्षीण–कण्ठ मृतवत्साओं का
करूण–रूदन दुर्दान्त नितान्त,
भरे हुए था निज कृश रव में
हाहाकार अपार अशान्त।

बहुत रोकता था सुखिया को
न जा खेलने को बाहर,
नहीं खेलना रूकता उसका
नहीं ठहरती वह पल भर ।

मेरा हृदय काँप उठता था,
बाहर गई निहार उसे
यही मानता था कि बचा लूँ
किसी भांति इस बार उसे।

भीतर जो डर रहा छिपाए,
हाय वही बाहर आया।
एक दिवस सुखिया के तनु को
तप–तृप्त मैंने पाया।

ज्वर से विहवल हो बोली वह,
क्या जानूँ किस डर से डर
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर।

बेटी, बतला तो तू मुझको
किसने तुझे बताया यह,
किसके द्वार, कैसे तूने
भाव अचानक पाया यह?
मैं अछूत हूँ मुझे कौन हाँ।
मन्दिर में जाने देगा ,
बार बार, फिर फिर, तेरा हठ।
पूरा इसे करुँ कैसे,
किससे कहे कौन बतलावे,
धीरज हाय धरुँ कैसे ?
कोमल कुसुम समान देह हाँ
हुई तप्त अंगार–मयी
प्रति पल बढ़ती ही जाती है
विपुल वेदना, व्यथा नई ।

मैने कई फूल ला लाकर
रखे उसकी खटिया पर
सोचा – शान्त करुँ मैं उसको,
किसी तरह तो बहला कर ।

तोड़–मोड़ वे फूल फेंक सब
बोल उठी वह चिल्ला कर –
मुझकों देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर

क्रमशः कण्ठ क्षीण हो आया,
शिथिल हुए अवयव सारे,
बैठा था नव-नव उपाय की
चिन्ता में मैं मन मोरे।

जान सका न प्रभात सजग से
हुई अलस कब दोपहरी,
स्वर्ण-घनों में कब रवि डूबा,
कब आई संध्या गहरी ।

सभी ओर दिखलाई दी बस,
अन्धकार की छाया गहरी।
छोटी-सी बच्ची को ग्रसने,
कितना बड़ा तिमिर आया।

ऊपर विस्तृत महाकाश में
जलते-से अंगारों से,
झुलसी-सी जाती थी आँखें
जगमग जगते तारों से।
देख रहा था - जो सुस्थिर हो
नही बैठती थी क्षण भर,
हाय! बही चुपचाप पड़ी थी
अटल शान्ति-सी धारण कर।
सुनना वही चाहता था मैं
उसे स्वयं ही उकसा कर -
मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल ही दो लाकर।

हे मात हे शिवे, अम्बिके,
तप्त ताप यह शान्त करो
निरपराध छोटी बच्ची यह,
हाय न मुझसे इसे हरो।

काली कान्ति पड़ गई इसकी,
हँसी न जाने गई कहाँ,
अटक रहे हैं प्राण क्षीण तर
साँसों में ही हाय यहाँ।
अरी निष्ठुरे, बढ़ी हुई ही
है यदि तेरी तृषा नितान्त,
तो कर ले तू उसे इसी क्षण
मेरे इस जीवन से शान्त।
मैं अछूत हूँ तो क्या मेरी ,
विनती भी है हाय अपूत,
उससे भी क्या लग जावेगी
तेरे श्री-मन्दिर को छूत?

किसे ज्ञात, मेरी विनती वह
पहुँची अथवा नही वहाँ।
उस अपार सागर के दिखा
पार न मुझको कहीं वहाँ,
अरी रात, क्या अक्ष्यता का
पट्टा लेकर आई तू,
आकर अखिल विश्व के ऊपर
प्रलय-घटा सी छाई तू
पग भर भी न बढ़ी आगे तू
डट कर बैठ गई ऐसी,
क्या न अरूण-आभा जागेगी,
सहसा आज विकृति कैसी।

युग के युग-से बीत गये है,
तू ज्यों की त्यों है लेटी ,
पड़ी एक करवट कब से तू,
बोल, बोल, कुछ तो बेटी।
वह चुप थी, पर गूँज रही थी
उसकी गिरा गगन-भर भर -
'मुझको देवी के प्रसाद का
एक फूल तो लाऊँगा:
हो तो प्रातःकाल शीघ्र ही
मन्दिर को मैं जाऊँगा।
तुझ पर देवी की छाया है
और इष्ट है यही तुझे,
देखूँ देवी के मन्दिर में
रोक सकेगा कौन मुझे।"

मेरे इस निश्छल निश्चय ने
झट-से हृदय किया हलका,
ऊपर देखा- अरूण राग से
रंजित भाल नभस्थल का!

झड़–सी गई तारकावलि थी
म्लान और निष्प्रभ होकर,
निकल पड़े थे खग नीड़ों से
मानों सुध–बुध सी खो कर।

रस्सी डोल हाथ में लेकर
निकट कुएँ पर जा जल खींच,
मैंने स्नान किया शीतल हो,
सलिल–सुधा से तनु को सींच।
उज्ज्वल वस्त्र पहन घर आकर
अशुचि ग्लानि सब धो डाली।
चन्दन–पुष्प–कपूर–धूप से
सजली पूजा की थाली।
सुकिया के सिरहाने जाकर
मैं धीरें से खड़ा हुआ।
आँखें झँपी हुई थीं, मुख भी
मुरझा–सा था पड़ा हुआ।

मैंने चाहा – उसे चूम लें,
किन्तु अशुचिता से डर कर
अपने वस्त्र सँभाल, सिकुड़कर
खड़ा रहा कुछ, दूरी पर।
वह कुछ कुछ मुस्काई सहसा,
जाने किन स्वप्नों में मग्न।
अक्षम मुझे समझकर क्या तू
हँसी कर रही मेरी?
बेटी, जाता हूँ मन्दिर में
आज्ञा यही समझ तेरी।
उसने नहीं कहा कुछ, मैं ही
बोल उठा तब धीरज धर–
तुझकों देवी के प्रसाद का
एक फूल तो दूँ लाकर।

ऊँचे शैल–शिखर के ऊपर ,
मन्दिर था विस्तीर्ण विशाल,
स्वर्ण–कलश सरसिज विहसित थे,
पाकर समुदित रवि–कर–जाल।
परिक्रमा–सी कर मन्दिर की,
ऊपर से आकर झर झर,

वहाँ एक झरना झरता था
कल कल मधुर गान कर कर।
पुष्प–हार–सा जँचता था वह
मन्दिर के श्री चरणों में।
त्रुटि न दिखती थी भीतर भी
पूजा के उपकरणों में
दीप–दूध से आमोदित था।

मन्दिर का आँगन सारा,
गूँज रही थी भीतर–बाहर
मुखरित उत्सव की धारा।
भक्त–वृन्द मृदु–मधुर कण्ठ से,
गाते थे सभक्ति मुद–मय –
“पतित–तारिणी, पाप–हारिणी,
माता, तेरी जय–जय–जय”
“पतित–तारिणी तेरी जय–जय”।

मेरे मुख से भी निकला,
बिना बढ़े ही मैं आगे को ,
जानें किस बल से ढिकला,
माता, के पास रोक बच्चों की,
कैसी विधि यह तू ही कह?
आज स्वयं अपने निदेश से,
तूने मुझे बुलाया है।
तभी आज पापी अछूत यह,
श्री–चरणों तक आया है।

मेरे दीप–फूल लेकर वे,
अम्बा को अर्पित करके,
दिया पुजारी ने प्रसाद जब,
आगे को अंजलि भरके,
भूल गया उसका लेना झट,
परम लाभ–सा पाकर मैं।
सोचा – बेटी को माँ के ये
पुण्य–पुष्प दूँ जाकर मैं।
सिंह पौर तक भी आंगन से
नहीं पहूँचने मैं पाया,
सहसा यह सुन पड़ा कि – कैसे,
यह अछूत भीतर आया?

पकड़ों, देखों भाग न जावे,
बना धूर्त यह है कैसा,
साफ–स्वच्छ परिधान किये है,
भले मानुषों जैसा,
पापी ने मन्दिर में घुसकर
किया अनर्थ बड़ा भारी ,
कुलषित कर दी है मन्दिर की
चिरकालिक शुचिता सारी।"

ऐ क्या मेरा कसूर बड़ा है
देवी की गरिमा से भी ,
किसी बात में हूँ मैं आगे
माता की महिमा से भी?

माँ के भक्त हुए तुम कैसे,
करके यह विचार खोटा,
माँ से सम्मुख ही माँ का तुम
गौरव करते हो छोटा,
कुछ न सुना भक्तों ने, झट से
मुझे घेर कर पकड़ लिया,
मार–मार कर मुक्के–घूँसे
धम–से नीचे गिरा दिया।

मेरे हाथों से प्रसाद भी ,
बिखर गया हाय सब का सब,
हाय अभागी बेटी तुझ तक
कैसे पहुँच सकें यह अब।

मैने उनसे कहा –दण्ड दो
मुझे मार कर, ठुकरा कर,
बस यह एक फूल कोई भी
दो बच्ची को ले जाकर।
न्यायालय ले गये मुझे वे
सात दिवस का दण्ड–विधान
मुझकों हुआ, हुआ था मुझसे
देवी का महान अपमान,
मैंने स्वीकृत किया दण्ड वह
शीश झुकाकर चुप ही रह,
उस असीम अभियोग, दोष का
क्या उत्तर देता, क्या कह?

सात रोज ही रहा जेल में
या कि वहाँ सदियाँ बीतीं,
अविष्श्रान्त बरसा करके भी
आँखें तनिक नही रीतीं।
कैदी कहते – "अरे मूर्ख, क्यों
ममता थी मन्दिर पर ही?
पास वहाँ मसजिद भी तो थी
दूर न था गिरिजाघर भी।"
कैसे उनकों समझाता मैं,
वहाँ गया था क्या सुख से,
देवी का प्रसाद चाहा था
बेटी ने अपने मुख से।

दण्ड भोग कर जब मैं छूटा ,
पैर न उठते थे घर को
पीछे ठेल रहा था कोई
भय–जर्जर तनु पंजर को।

पहले की–सी लेने मुझकों
नही दौड़ कर आई वह ,
उलझी हुई खेल में ही हा,
अबकी दी न दिखाई वह।

उसे देखने मरघट को ही
गया दौड़ता हुआ वहाँ
मेरे परिचित बन्धु प्रथम ही
फूँक चुके थे उसे जहाँ।

बुझी पड़ी थी चिता वहाँ पर
छाती धधक उठी मेरी,
हाय! फूल–सी कोमल बच्ची
हुई राख की थी ढेरी,
अन्तिम बार गोद में बेटी,
तुझकों ले न सका मैं हाय,
वह प्रसाद देकर ही तुझको
जेल न जा सकता था क्या?

तनिक ठहर ही सब जन्मों के
दण्ड न पा सकता था क्या?
बेटी की छोटी इच्छा वह
कही पूर्ण मैं कर देता
तो क्या अरे दैव, त्रिभुवन का
सभी विभव मैं हर लेता?

यही चिता पर धर दुँगा मैं ,
कोई अरे सुनों, वर दो –
मुझकों देवी के प्रसाद का
एक फूल ही लाकर दो।

कवि सियाराम शरण गुप्त

अनुभव

भावनाओं के प्रवाह में,
क्यों इस कदर मैं बह गया ?
यथार्थ से अनभिग्य मैं,
सपने संजोते रह गया
नादान था मैं, आवेश में
ना जाने क्या–क्या कह गया ?
वेदना तो असहनीय थी,
मैं त्याग जानकर सह गया
विश्वास के स्तम्भ का,
नींव आज ढह गया
सफर अभी बाकी है, पथिक
मैं अकेला रह गया ।

स्मित कुमार
आई.पी.जी. 2012

परमसाथी

न समझ कभी अपने को एकला,
क्योंकि पल–पल है तेरे साथ सच्चा साथी तेरा,
देखता है तुझे समझता है तुझे,
सुनता है तुझे, हँसाता–रूलाता है तुझे,
क्यों हुआ है तेरा जन्म यह है एक राज,
इस पहेली को हल करना ही तेरा काज।

एक बार उस उजियाली दुनिया में जाकर देख,
बस एक बार अपने उस साथी को बुलाकर तो देख
उसे पाकर यूँ लगे जैसे पा लिया संसार,
एक अलग एहसास है जो पाना है इस बार।

सोच अपने जन्मे जाने के उद्देश्य को,
शायद तुझे ही मिटाना है जग के अँधेरों को,
देख अपने भीतर तुझमें है असीम शक्ति,
जो तू चाहे वो तू पाए, बस उजागर कर वो भक्ति,
वो भी है बेकरार मिलने को तुझसे,
बाँह फैलाए है खड़ा जाने वो कब से,
है ये एक बँधन अटूट, रिश्ता मीठा–प्यारा सा,
बस एक बार अपने मन को कर तू हल्का न्यारा सा।

फिर देख कभी न समझेगा खुद को एकला,
क्योंकि फिर तू न पाएगा किसी से कैसा भी फांसला,
भूल जाएगा 'निराशा' शब्द को जब बनेगा सबकी आशा,
तब समझ आएगा शायद क्यों जन्में गए की परिभाषा,
पकड़ हाथ उस साथी का और कर अपना जीवन साकार,
बदल जीवन की डगर और चल दे उसकी और इस बार।

अदिति तयाल
आई.पी.जी. 2012

क्यूं ना लिखूँ

जब बात बातों – बातानों में बढ जाये,
एक प्यारा सा शिकवा गाली बन जाये।
होंठों तक आकर भी बात रूकी रहे,
और प्रेमी ही सवाली बन जाये।
तो क्यू न लिखूँ।

जब किलकारी "शोर लगे
पत्नी अपनी चोर लगे
मन बन्धन टूट चुके
पर तन से नाता जोड़े तो
क्यूं ना लिखूँ।

ममता का मोह अब छूट चुका,
आंचल का पानी सूख चुका।
अब किस मुंह से कहूं मैं कुछ,
जब मां ही मारे बच्चे को।
तो क्यूं ना लिखूँ।

आँखों की बेचैनी अब छुपती नहीं।
प्यास है जाने कैसी कि बुझती नहीं।
धूमे सारे नदियां–नालें,
पर जब.. 'पानी' ही 'प्यास बढाये तो,
क्यूं ना लिखूं।

रोहित कुमार
एम. टेक. 2012

अखण्डता

हिंन्दू की करते है बात,
मुस्लिम की करते है बात।

अरे बात करो इंसान की,
देश के अभिमान की।

फिर करो हिंदुस्तान की ।
और करो पाकिस्तान की ।
फिर घिनौनी शक्तियां कर रही है स्वार्थ सिद्ध।
खा रही है देश को फिर भी न कहो इन्हें गिद्ध॥

यह राष्ट्र का अभिशाप है।
हमारी गलतियों का प्रताप है।

लड़ा रहें है जातपात से,
दूर कर रहें है बेटे को बाप से,
यह कैसी है विडम्बना।

लानी हमें है चेतना, चेतना इस बात की,
जरूरत है सभी के साथ की।
बात करें अखण्डता की ।
देश की स्वतंत्रता की।
फिर करें पाकिस्तान की और करे हिन्दुस्तान की।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

अभी हुआ वतन आजाद नहीं

आजाद वतन कहने वालो,
अभी हुआ वतन आजाद नहीं।
जिस घर में भाई निकलता है,
गद्दार तेरे ही घर पलता है।
जहा तेरा तिरंगा जलता है,
फिर भी न खून उबलता है।

तेरे देश की प्रारम्भिक भूलों पर क्यों उठती कोई
आवाज नहीं।
आजाद वतन कहने वालो,
अभी हुआ वतन आजाद नहीं।

वोटो का बन उपासक है,
डाकू यहाँ का शासक है।
भक्षक जो बन पालक है,
भावों का वही कुचालक है।
इन चोर, लुटेरों, गद्धारों से सुलझेगा परिवाद नहीं,
आजाद वतन कहने वालों,
अभी हुआ वतन आजाद, नहीं।
कुर्सी का बड़ा चहेता है,
भुखमरी गरीबी देता है।
जो तेरा वोट विजेता है,
वही भ्रष्टाचार प्रणेता है।
यह कैसा तेरा नेता है,
जे चारा तक चर लेता है।

इन्हे सबक सिखाने को,
क्यूँ हिंदी के बेटे बनते जाबांज नहीं।
आजाद वतन कहने वालों,
अभी हुआ वतन आजाद नहीं।
तलवार तेरे सर लटकी है।
बन्दूक खाली वहां बंटती है।

लाशों से धरती फटती है।
तेरी भुजा कटती है।
भारत मर्यादा घटती है।
क्यूँ शेर बना बकरी,
तेरा कभी रिवाज रहा नहीं,
आजाद वतन कहने वालों,
अभी हुआ वतन आजाद नहीं।

पक्षी पर झपटे ऐसा बाज न हो।
धरती पर कोई दगाबाज न हो।
गद्दारों के सर ताज न हो।
जहाँ वतन की लुटती लाज न हो।
वन्देमातरम् पर सबको नाज हो ।
फिर से वही जिंदा आवाज हो।
क्यूँ सभी भारतवासी ऐसा करने में समर्थ नहीं,
आजाद वतन कहने वालो,
अभी वतन आजाद नहीं॥

मोना यादव
आई.पी.जी. 2011

गजल

मेरे घर के आंगन की बेबसी पे लिख दो न
एक गजल चिरागो की जिंदगी पर लिख दो न
कच्चे पक्के रंगो की ओढ़नी पे लिख दो न
तुम तो एक शायर हो कुछ मुझ पे लिख दो न
साहिलों पे बिखरी है रेत क्यों समंदर की
रेत छू के मत देखो तश्नगी पे लिख दो न
रात भर सुनाती है शम्मा कितने अफसाने
सुबह होने से पहले रोशनी पे लिख दो न ॥

कवियित्रि नाजिया नसीम
कवि सम्मेलन 2014

लोग क्या कहेंगे

एक उलझन है, जिसे मैं सुलझा नहीं सकता,
एक तड़पन है, जिसे मैं छिपा नहीं सकता।

कुछ कमीने दोस्त हैं, जिन्हें मैं बहला नहीं सकता,
और एक हमारा मन है, जिसे मैं फुसला नहीं सकता।

कुछ बातें है, जो मैं बता नही सकता,
कुछ किस्सें है, जिसे मैं झुठला नहीं सकता।

कुछ ख्वाहिशें हैं, कुछ बन्दिशें है।
कुछ बचकानियाँ हैं, कुछ नादानियाँ हैं।

और इन सब में फँसा हमारा मन,
आखिर करें भी तो क्या करें ?
लोग क्या कहेंगे ?
यही सोच कर न जाने कब तब,
हम यूँ ही तड़पते रहेंगे ?
जरुरत है एक बदलाव की।

अजी फुर्सत किसे है दूसरों के बारे में सोचने की ?
खुद के लाइफ में ही टेंशन है सबको दुनिया भर की।
और अगर सोच भी ले
तो हम पर क्या फर्क पड़ता है?

इतनी सी बात के लिए,
तू व्यर्थ ही अपना जीवन नर्क करता है।

बस इतना कहता हूँ, ये तू याद रखना।
जीवन में हर पल बस अपने मन की सुनना।

क्योंकि बीता हुआ पल फिर वापिस नहीं आता।
वरना जीवन भर रह जायेगा पछताता,
कि काश

स्मित कुमार
आई.पी.जी. 2012

अजनबी

जिंदगी को देखा था उसने बड़े करीब से,
डरता था अजनबी किसी न किसी चीज से,
कौन सा रकीब न जाने किस भेष में,

तोड़ कर महल सपनों का भेज दे किसी शेष में,
कई बार गुजरा था उस मुकाम से,
सोचा था करेगा प्यार किसी ईमान से।
फर्क पैदा कर दिया उसकी निगाहों ने,
सोच कर भी न कुछ कर सका उसकी चाह में।

हाथ मसलता रह गया अजनबी,
बस इसी फिराक में कि हाँ कभी।
जा रहा है छोड़कर अपनी वफा,
जिसने कर दिया दिल को खफा।

आरजू ए अजनबी फिर भी खुदा से,
मिल जाये कोई इसे इतने प्यार से।
भूल जाये अजनबी को बड़े ईमान से,
न शर्म न हया दिखे आइने में,
वो तो अजनबी था अजनबी रह गया,
कहीं पाला न पड़े किसी बईमान से,
वरना खत्म कर लेगा अजनबी जिंदगी बड़े ईमान से।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

माँ

अगर कुछ कर सको तो फिर मुझे बच्चा बना दो माँ,
मुझे एक बार फिर तुम ठीक से चलना सिखा दो माँ।

अंधेरे घेरते हैं अब मेरे साए की चुपके से,
बहुत घबरा गया हूँ तुम मुझे उगँली थमा दो माँ।

मैं अपना चैन खो बैठा हूँ दो रोटी कमाने में,
निवाला एक अपने हाथ से मुझको खिला दो माँ।

बड़ी तेजी से दुनिया दौडती है थक चुका हूँ मैं,
जरा होले से अपना हाथ तुम सिर पर फिरा दो माँ।

जमाने की बुरी नजरो में मैं दिन रात रहता हूँ,
तुम अपनी आँख के काजल का
फिर टीका लगा दो माँ।

मेरे जज्बात मे दुनिया खिलौने की तरह खेली,
खिलौना ही मुझे मेले से मिट्टी का दिला दो माँ।

कवि सुदीप "भोला"
कवि सम्मेलन 2014

दोस्ती

"शायद जिंदगी बदल रही है"
"शायद जिंदगी बदल रही है"
जब मै छोटा था, "शायद दुनिया
बहुत बड़ी हुआ करती थी"

मुझे याद है मेरे घर से स्कूल तक
का वो रास्ता, क्या क्या नहीं था वहाँ
चाट के ठेले, जलेबी की दुकान
बर्फ के गोले, सब कुछ,
अब वहां ''मोबाईल शॉप"
विडियो, पार्लर है,
फिर भी सब सुना है
"शायद अब दुनिया सिमट रही है"

जब मैं छोटा था ,
"शायद" शाम बहुत लम्बी हुआ करती थी
मैं हाथ में पंतग की डोर पकड़े,
घंटो उड़ाया करता था,
वो लम्बी, साइकिल रेस,
वो बचपन के खेल,
वे हर "शाम थक के चूर हो जाना,
अब "शाम नहीं होती, दिन ढलता है।
और सीधे रात हो जाती है।
"शायद वक्त सिमट रहा है।

जब मैं छोटा था,
"शायद दोस्ती
बहुत गहरी हुआ करती थी।
दिन भर वो हुजूम बनाकर खेलना,
वो दोस्तों के घर का खाना,
वो लड़कियों की बातें,

वो साथ रोना।
अब भी मेरे कई दोस्त है ,
पर दोस्ती जाने कहाँ है ,
जब भी "ट्रैफिक सिग्नल" पे मिलते हैं।
"हाय" हो जाती है,
और अपने अपने रास्ते चल देते है,
होली, दीवाली, जन्मदिन,
नए साल पर बस एस.एम.एस. आ जाते हैं,
शायद अब रिश्ते बदल रहें है।

जब मैं छोटा था,
तब खेल भी अजीब हुआ करते थे,
छुपन छुपाई, लंगड़ी टांग,
पोशम पा, कट केक,
टिप्पी टीप्पी टाप.
अब ''इन्टरनेट, ऑफिस से फुर्सत ही नहीं मिलती,
शायद जिंदगी बदल रही है।

जिंदगी का सबसे बड़ा सच यही है,
जो अक्सर कब्रिस्तान के बाहर,
बोर्ड पर लिखा होता है।
मंजिल तो यही थी,
बस जिंदगी गुजर गयी मेरी
यहाँ आते आते।

जिंदगी का लम्हा बहुत छोटा सा है,
कल की कोई बुनियाद नहीं है,
और आने वाला कल सिर्फ सपने में ही है।
अब बच गए इस पल में,
तमन्नाओं से भरी इस जिंदगी में
हम सिर्फ भाग रहे है।
कुछ रफ्तार धीमी करो,
मेरे दोस्त ,
और इस जिंदगी को जियो,
खूब जियो मेरे दोस्त ,
और औरों को भी जीने दो।

कदम रूक गए जब पहुंचे हम रिश्तों के बाजार में,
बिक रहे थे रिश्ते खुले आम व्यापार मे।
काँपते होठों से मैंने पुछा,
क्या भाव है भाई इन रिश्तों का ?
दूकानदार बोला कौन सा लोगे?
बेटे का या बाप का?
बोलो कौन सा चाहिए ?
इंसानियत का, या विश्वास का?
बाबूजी कुछ तो बोलो कौन सा चाहिए।
चुपचाप खड़े हो कुछ बोलो तो सही,
मैंने डर कर पूछ लिया दोस्त का।

दुकानदार नम आँखों से बोला,
''संसार इसी रिश्ते पर ही तो टिका है,
माफ करना बाबूजी ये रिश्ता बिकाऊ नहीं है।
इसका कोई मोल नहीं लगा पाओगे,
और जिस दिन ये बिक जायेगा।
उस दिन ये संसार उजड़ जायेगा।
सभी मित्रों को समर्पित।

वैभव शर्मा
आई.पी.जी. *2007*

निवेदन

करता आज हूँ निवेदन।
कभी सुनूँ न कोई क्रंदन।

आपका करुँ में कैसे वंदन,
एक ही नहीं बार बार अभिनदंन।

कृपा दृष्टि करना अति आवेदन,
एक ही नहीं कई भेजे है आवेदन।
बना लें हमे अपना ही दास,
यही मरते दम है मेरी आस।

सेवा में आपके बलि हो जाऊँ,
नहीं पात्र जो इतनी भी कृपा पाऊँ।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

ख्वाहिश

जो तुम साहिल की बाते सुन पाते,
तो तु जान लेती मैं क्या सेाचता हूँ।
वो विधा जो तुम्हे भी जान पाते,
तो तुम जान लेती मैं क्या सोचता हूँ ॥

वो आवाज तुमको भी जो भेद जाती,
तो तुम जान लेती में क्या सोचता हूँ।
मासूमियत का जो तुम्हारे पर्दा सरकता,
खिड़कियो से आगे भी देख पाते,
आँखों से आदतों की जो पलके हटाते ,
तो तुम जान लेते मै क्या सोचता हूँ॥

जो ख्वाब देखे मैंने काश उन्हें जान जाते,
मेरी मंजिलो को पाने में साथ निभा पाते,
मेरी तरह होता अगर खुद पर जरा भरोसा
तो कुछ दूर तुम भी साथ–साथ आते॥

महक गगन की जो चूमती तुम्हें,
ख्वाइशें तुम्हारी नया जन्म पाती,
खुद दुसरे जन्म में मेरा साथ देने,
कुछ दूर तुम भी साथ साथ आते॥
जो मेरे चक्षु में बहते नीर को देख पाते,
तो मेरी भावनाओं की धारा को समझ पाते,
तब कुछ दूर तुम भी साथ साथ आते॥
तब कुछ दूर तुम भी साथ साथ आते॥

अमनदीप सिंह
आई.पी.जी. 2013

आधुनिक परिवेश में हिन्दी

आधुनिकता के परिवेश में हिन्दी का नहीं सम्मान
जो दे साक्षात्कार हिन्दी में उसे आंका जाये
आधुनिकता से अज्ञान।
जो दे साक्षात्कार अंग्रेजी में उसे ही मिले कामकाज।
हिन्दी न हुई, बन गई गले की फाँसी।
हिन्दी न पढ़े तो कहा जाये –
कैसे हिन्दुस्तानी और हिन्दी पढ़े जो कहये गवार।
हाय आधुनिक परिवश का अविस्मरणीय अत्याचार।
सोच हिन्दी, विचार हिन्दी ,
मन के समस्त व्यवहार हिन्दी।

इसीलिये बिना संकोच, मन से अपनाओ हिन्दी।
अंग्रेजी का ज्ञान और हिन्दी का सम्मान,
ऐसा विलक्षण मिलाप,
निश्चित ही होगी सफलता का आधार।

डॉ एकता सकवार
सचिव, राजभाषा हिन्दी समिति

कम्प्यूटर

कम्प्यूटर का जमाना है,
सभी ने इसको माना है।

वैज्ञानिकों का निशाना है,
सभी कुछ कम्प्यूटर से दिखाना है।
बेबेज ने डाली है नीव,
अनेकों ने किया इसे सजीव।

आदर्शों का गुलाम है,
हमें इस पर अभिमान है।

आंकड़ो का खेल है,
आदेशों का मेल है।
मानव के उपकार है,
कम्प्यूटर के प्रकार है।
एनालॉग और डिजिटल,
अनेकों उपलब्धियों से हुए हम विध्वल,
सुपर कम्प्यूटर हमने बनाया है।
गौरव देश का बढ़ाया है।

बेसिक, कोबोल ने सिखाया है,

फोर्टोन और सी में दिखाया है।

पास्कल में वैज्ञानिकों का साया है,
21 वीं सदी का रास्ता दिखाया है।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

विदाई

घड़ी आज कैसी है आई,
मौका खुशी का फिर भी आँख भर आयी ।
भीगी पलकें क्या कह रहीं है?
बस दिल से दुआएँ दे रहीं है।
कैसी–कैसी बातें कैसे–कैसे दिन,
गुजारे हमने जो आपके संग।

उठ मीठी यादों के साये में,
हम रह लेंगे अब तो अहले करम।
दिल की यही है बस दुआ,
रहे सलामत आपको न लगे बद्दुआ।
मंजिलें आपको यूं ही मिलती रहे,
बगिया मां बाप की खिलती रहे।
रास्ते हो आपके स्वर्णिम शुभ अवसर,
मनाएं आप बस जश्न का सफर।
कवि होते यदि हम शब्द हार अर्पित कर देते।
मूर्तिकार होते यदि स्नेहमूर्त हम कर देते।
अंकिंचन कुछ भी तो नहीं हम,
फिर भी करते यही स्नेहोदगार।
सफलता तुम्हें चूमें अचल अनुराग भरे जीवन में,
कोने–कोने में बस हो प्यार ही प्यार,
प्रार्थना करते प्रभु से हम अनुज ये बार–बार,
उम्मीदों पर खरे उतरना बड़ो का सम्मान करना सीख
कर आप से।
धन्य हो गये हम अनुज आज आग्रह आप से,
सूरज न बन सके अगर दीप ही बन के जलना।
कितनी ही कठिन हो डगर सच्चाई से ही चलना।
प्रेरणाएं हमारी हैं सफलताएं आप की,
रहें न दूरियां अब जमी और आसमान की।
स्नेहिल स्रोतियों से पलकें हैं डब डबाई
कैसे कहें हम विदाई विदाई विदाई।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

इतिहास की परीक्षा

इतिहास की परीक्षा थी उस दिन,
चिंता से हृदय धड़कता था।

जब से सुबह हुई थी तबसे,
बायाँ नैन फड़कता था।

जो उत्तर मैंने याद किये
उनमें से कुछ याद किये
उनमें से कुछ याद हुए।

वो भी स्कूल पहुँचने तक,
यादों मै बर्बाद हुए।

पर्चे पर मेरी नजर पड़ी,
तो सारा बदन पसीना था।

एक घंटे के भीतर का डाला,
सब प्रश्नों का वारा–न्यारा।
अकबर का बेटा था बाबर,
जो वायुयान से आया था।

उनसे ही हिंद महासागर को,
अमेरिका से मंगवाया था।

झांसा दे जाती थी सबको,
ऐसी थी झाँसी की रानी।

अकबर अशोके होटल मैं,
खाया करती थी बिरयानी।

होटल का मालिक था अशोक,
जो ताजमहल मैं रहता था।

अंग्रेज भारत छोड़ो,
वो लाल किले से कहता था।

ऐसे ही चुन चुन कर उत्तर,
प्रश्नों के पापड़ बेले थे।

उत्तर के उँचे पहाड़,
टीचर की ओर धकेले थे।

टीचर भला इस उचाँई तक,
कैसे भला चढ़ पाते।

लाचार पुराने चश्में से,
इतिहास नया क्या पढ़ पाते।

टीचर ने जब कॉपी जाँची,
सारा इतिहास भूगोल हुआ।

फिर क्या होना था देखों,
मेरा नंबर तो गोल हुआ।

मोना यादव
आई.पी.जी. 2011

कहाँ हूँ मैं

कभी जब सोचता हूँ कहाँ हूँ मैं,
इस अन्धकार में खोजता रह जाता हूँ मैं।

जीवन एक इम्तहान सा लगता हैं,
आदमी को शैतान सा लगता हैं।

आदमी सोचता हैं क्या,
नहीं पता करेगा और क्या।

पास जाकर मैने इसे जब भी हैं देखा,
सच मानिए आँखो ने हमेशा खाया है धोखा।

कितना सुंदर आवरण है इसका,
पाया अलग सा चेहरा न जाने किसका।

दिखाता है जरा सा सहमा सा
परेशानियों में उलझा इंसान,
कुछ पाने की खातिर खाना पड़ा जिसे अपना ईमान।

जिंदगी का ये परम सत्य है,
समझाने की कोशिश में करता क्या नहीं कृत्य है।
कब जिंदगी शुरू हुई कब शाम हो गयी,
यही उम्र थी वह भी तमाम हो गयी।

प्रश्न–प्रश्न सा ही रह गया,
मैं अपने आप को ही खोजता रह गया।

डॉ अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

सरल, मधुर मेरी रचना

सरल, मधुर मेरी रचना,
लिख रहा हूँ सुन्दर सपना।

इठलाती, इतराती,
झूम रही है देखों लहराती।

झाड़ू, पोछा, बिस्तर लगाना,
छूप–छूप के हँसना रोना।

रूठ रूठ के जिद्दी होना,
फिर चाचू से 2 रू लाना।

स्कूल जाना, स्कूल आना,
खुद ही खुद को बतायिना।

लगता उसकों सबसे अच्छा,
मेरे फोन से फोन लगना।

पापा की गाड़ी पर घूमना फिरना ,
फिर हवाओं से बातें बतायिना ।

सरल, मधुर मेरी रचना,
लिख रहा हूँ सुन्दर सपना।

इठलाती, इतराती ,
झूम रही है देखों लहराती।

जितेन्द्र दुबे
सदस्य, राजभाषा हिन्दी समिति

स्वप्न

कभी जब उसने था पुकारा,
मेरा कहीं दूर था किनारा।
पहुँच रहा था उसी डगर,
पुकारा जहाँ उसने अगर।

आपकी वफाओं से शर्म आ गयी,
खुशनुमा महफिल के रंग उड़ा गयी।
मगर वो उनका मुस्कुराना,
जैसे चिड़ियों का चहचहाना।

कुछ ऐसा ही रास आया,
कहां खो गया था खुद को ही नहीं ढूँढ़ पाया।

तब किसी ने पीठ को थपथपाया,
मैं वाकई था बहुत घबराया।
स्वप्न मेरा टूट गया,
सत्यता से रुबरु हो गया।

शर्म आयी मुझे अपने आप पर ,
पाकर तुम्हें किसी किताब पर।

बस टिक गयी निगाहें उस राह पर,
आयी थी जिधर भी एक आह पर।
खत्म हो गया था स्वप्न मुस्तफा का ,
दिख गया नजारा उसे अपनी जीम का।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

आवाहन

तमस का कद बढ़ गया है,
झूठ सच पर चढ़ गया है।

सत्य घायल क्यों हुआ है,
न्याय विस्मित क्यों हुआ है।

चारो ओर निराशा ही निराशा है,
मन में नही हैं प्राप्त्याशा।

रविवर्ण भी धूमिल हुआ है,
दिन में अंधेरा घोर हुआ है।

है भेदने कि बात क्या,
जब लक्ष्य ही दिखता नहीं है।

हिरण है सम्मुख पड़ा,
पर सिंह ही उठता नहीं है।

अज्ञान कि विपदा बड़ी है,
अंध कूपों की लड़ी है।

आसक्ति बाधा बन खड़ी है,
चिंतन मनन कि यह घड़ी है।

हो रात्रि में संघर्ष अब,
और दुंभी जयघोष हो।

अब द्वन्द्व होना तय हुआ,

जितेन्द्र दुबे
सदस्य, राजभाषा हिन्दी समिति

ईश्वर से, मैं हूँ खफा

हे ईश्वर,
"तू ही जग निर्माता है, तू ही संसार के हर कण में
तू ही मेरे हर पल में, फिर क्यो रहूँ तुझसे खफा ,
पर हे ईश्वर, मैं हूँ तुझसे खफा''

एक नन्हीं परी जब घर आई,
खुशियाँ लगा जैसे खूब भर कर लायी।

सबकी लाडली सबकी प्यारी, सबकी आँखों में है छाई
प्यार बाँटती गम भुलाती, सबकों जो चाहती हम
चारों में तीसरी वोह सबकों भाती''

आँखे हैं उसकी इतनी प्यारी गाल गुलाबी,
लगती सबसे न्यारी।
रंग गुलाबी और नांरगी,
लगता उस पर बहुत है प्यारा।
हर जन्मदिन उसका,
जैसे लगता बड़ा त्यौहार है आया।

"एक प्यारी सी लड़की, हर पल देती जो सबका साथ
आज साथ छोड़ मेरा, कहाँ गयी वो प्यारी नूर''

"जिसे ढूँढू मैं हर जगह, दिखाई दे भला मुझे कहाँ
माँगी थी ईश्वर तुझसे दुआ,
फिर भला क्यूँ नहीं बताता
कि वो है कहाँ, वो है कहाँ''।

"इतना बड़ा दर्द तूने उसे दिया,
आखिर क्या किया था उसने भला"।

मासूम सी निगाहें सोचती रहीं, आखिरी वक्त तक,
कब खड़ी होकर मैं बिस्तर से मुस्कुराउँगी खेलूगी।

"पढ़ाई में वो सबसे अव्वल,
बनना चाहती थी वो डॉक्टर"
क्या मानव और देश कि सेवा,
करना चाहती थी वो अपना कर्तव्य हर पल"

"वो नन्ही सी प्यारी चिड़िया,
एक दिन वापस आएगी
यही सोचती हूँ मैं हर पल,
वो अभी जहाँ भी हो खुश रहे सदा"

दुख: – दर्द नाम का शब्द नहीं हो,
उसकी जिन्दगी में कभी

" एक दिन उड़ते–उड़ते कभी, वो वापस जरूर आएगी
उसके हर सपने को, जरूर करूँगी में पूरा
अपने लक्ष्य को पाउँगी मैं, मिटा दूंगी हर दु:ख
पर इस दु:ख का क्या करूँ क्यों नहीं रहूँ मैं दुखी।''

"एक बार बस मेरे ईश्वर, कह दे मुझसे चुपके से
मेरा बच्चा जहाँ, हो वो हर पल खुश
खुशियाँ हर पल उस पर बरसे,
नहीं हो उसे कोई कमी''

"फिर क्यूँ है खुशबू तू दुखी,
महक उठ फिर से जीवन में
मैं हूँ इस वार तुझसे खफा,
पर कोई कैसे रहे भला तुझसे खफा''
"सोचा एक दिन बुलाएगा, तू मुझे अपने दरबार में
पर मैं देख रही हूँ राह, मैं देख रही हूँ राह''

"यह जानकार, मुझे कमजोर न समझना,
अभी तो मुझे करना है, हर राह को पार
बस मेरी प्यारी रूचि, जहाँ भी हो खुश रहे हर पल''

"संसार कि हर खुशी हो, मेरी रूचि के पास
कहने को तो ईश्वर तुझसे, बहुत कुछ है मेरे पास''

"कहने तू तो हर बात को जानता,
फिर क्यूँ हूँ मैं इस बात से अनजान,
मैं नही रहना चाहती ईश्वर, तुझसे खफा
तू तो है मेरे हर पल, फिर क्यूँ हूँ मैं तुझसे खफा''

खुशबू सूर्यवंशी
आई.पी.जी. 2012

मेरा दीवानापन

तुम बिन जीवन कैसे काटूँ,
रातियां आँसू भर-भर पाटूँ।

जब से बिछड़े हम है तुमसे,
दिन और रात बस है एक से।

किसे पता कब क्या हो गया,
तुमको देखे एक अरसा हो गया।

याद भी निकम्मी हो गयी है,
आती तो है पर शायद वह भी ठण्डी हो गयी है।

दिन तो बस ऐसे कटता है,
जैसे भूखा रोटी झपटता है।

मेरा बस एक ही प्रश्न है,
क्या मेरा भी कोई रत्न है।

रत्न है तो चमकता क्यो नहीं,
जौहरी-जौहरी को खोजता क्यों नहीं।

डॉ अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

कोई और आयेगा

कुछ दिन पहले कि है बात
मैं था अपने मित्र के साथ,
हम दोनों गप्पे लड़ा रहे थे,
रात्रि के मौसम का आनन्द ले रहे थे।

कदम वहीं के वहीं ठिठके,
एक व्यक्ति था कराहता हुआ,
सड़क पर गिरा पड़ा
सहायता निमित्त पुकारता हुआ।

मैंने मदद लिए कदम आगे बढ़ाया
तभी मेरे मित्र ने मुझे समझाया,
दुर्घटनाओं का तो शहर है यह,
यदि तुम उसकी मदद करोगे,
मुश्किल में खुद ही पड़ोगे
उसकी सलाह को हित में पाया,
बवाल समझकर कदम आगे बढ़ाया।

और सोचा कि,
उसकी मदद के लिए कोई और आयेगा
जिससे वह व्यक्ति मदद पायेगा।

किसी और दिन,
मैं जा रहा था अपने घर कि ओर
आगे सड़क से अपनी गाड़ी मोड़
तभी मैं फिसला,
जमीन पर घिसला।

रक्त भी बहने लगा,
सहायता के लिए कहने लगा।

तभी एक व्यक्ति सामने आया,
देखते ही उसे, मस्तिष्क ने झटका खाया।

यह वही पूर्व प्रसंग वाला व्यक्ति था,
जिसको सड़क पर घायल मैं छोड़ गया था।
उसके कष्ट से हटा ध्यान,
आनन्द कि ओर मुड़ गया था।

परन्तु मांगता मदद कैसे,
छोड़ गया था मैं भी उसे वैसे ।
वह चला गया था,
परन्तु मेरा मन कह रहा था।
कि तेरी मदद को कोई और आयेगा ।

जितेन्द्र दुबे
सदस्य, राजभाषा हिन्दी समिति

क्यूँ भला चुप है

क्यूँ भला चुप है, किसी से क्या बताएं ।
हम तुम्हारें है तुम्हीं से क्या बताएं ॥
ये दिल भला क्या है तुम्हारा आईना ।
है आईने में क्या, किसी से क्या बताएं ॥

एक कतरा तैरता सागर में है ।
क्या नहीं देखा, किसी से क्या बताएं ॥
है बला न सजा न जिंदगी मजा है ।
इक ख्वाब जागा–जागा किसी से क्या बताएं ॥

बेहतर हुआ यूँ हुआ वैसा नहीं हुआ ।
इन्सां है दास्तान–ए–खबर किसी से क्या बताएं ॥
सीने के बुलबुले सीने में रखो राही ।
कोई बात हीन समझे किसी से क्या बताएं ॥

क्यूँ भला.....

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

छोटी सी जिन्दगी है

हँसना ही जिन्दगी है इसके बीते जो पल,
वही तो जिन्दगी है,
नामुमकिन कुछ नहीं सब कुछ है यही,
इसी का ही नाम जिन्दगी है।

पाना ही सब कुछ नहीं,
पाकर कुछ खोना भी जिन्दगी है।
हँसना ही जिन्दगी है इसके बिताये जो पल,
वही तो जिन्दगी है।

तन्हाई को दूर करों अपने सपनों खुश करों,
छोटी सी जिन्दगी है इसे हर पल खुश करों ।

चार दिन की जिन्दगी है मस्ती है जी ले यार,
हँसना ही जिन्दगी है इसके बिताये जो पल,

वही तो जिन्दगी है।

जितेन्द्र दुबे
सदस्य, राजभाषा हिन्दी समिति

मेरा दोस्त

जब तुम इस दुनिया से जाओगे,
दूर कहीं एक नया जन्म पाओगे।

इस बार जो हुआ बहुत बुरा हुआ ,
अगली बार एक लम्बी पूंछ और चार टांग पाओगे॥

भगवान करे, कोई तुमसा न बनाये,
एक तू ही तो कार्टून है कहीं कॉमन न हो जाये।

हमेशा आगे बढ़ो, दूसरों से
आगे निकलने कि कोशिश करों।
पीछे वालों को पीछे छोड़,
आगे वालो से आगे निकलने की कोशिश करों।
तभी तुम एक अच्छे रिक्शेवाले बन सकते हो।

कभी तुमने पॉलीथीन के अन्दर बन्दर को देखा है,
सोचो और सोच। अपना लाइब्रेरी कार्ड देखो।

तेरी याद न आये ऐसा होने न देंगे,
तुम जैसा दोस्त खोने न देंगे।

शराफत से रहना,
वरना कान के नीचे घुमा के देंगे।

प्रशांत सिंह
एम. टेक. 2012

वक्त

अक्सर इंतजार करने वाला,
वक्त को तेज चलाना चाहता है।

और अब मिलने की घड़ी आई,
तो वक्त को थामना चाहता है।

"काश यह वक्त यहीं थम जाए।"
"काश यह वक्त टल जाए।"

"काश यह लम्हें कभी ना खत्म हों।"
"काश यह घड़ियाँ जल्दी बीत जायें।"

ऐसा कहने वाला इंसान यह क्यों भूल जाता है कि
वक्त तो अपना फर्ज खूब निभाता है,

ना ही लम्हों की गिनती में घूमता है,
और ना ही इनकी रफ्तार को बदलता है।

कोई वक्त की मार से डरता है,
कोई वक्त से लड़ता है,

कोई बीते वक्त को याद करता है,
कोई सही वक्त का इंतजार करता है,

पर सच्चा बंदा हमेशा
वक्त से कंधा मिलाकर चलता हैं॥

शुभम अग्रवाल
आई.पी.जी. 2011

माँ

कब्र की आगोश में जब थक कर सो जाती है माँ,
तब कहीं जाकर थोड़ा सुकून पाती है माँ,

फिक्र में बच्चों की कुछ इस तरह घुल जाती है माँ,
कि नौजवान होते हुए भी बुढ़ी नजर आती है माँ,

कहते है रिश्तों की गहराईयों को तो देखिऐ,
चोट लगती है हमें और चिलाती है माँ,

कब जरूरत हो मेरे बच्चो को इतना सोचकर जागती,
है आखें, और सो जाती है माँ,

घर से जब परदेश जाता है नुरे नजर,
हाथ में कुरान लेकर दर पर आ जाती है माँ,

जब परेशानी मे घिर जाते है हम परदेश मे,
आंसु पौंछने ख्वाबों में आती है माँ,

हम खुशियों में भले ही भुल जाते है माँ का दास्ताऐं,
मुसीबत सर पे हो तो याद आती है माँ,

लौट कर सफर से घर आते है, डालकर,
बाहें गले में सर को सहलाती है माँ,

शुक्रिया हो नहीं सकता उसका अदा,
मरते-मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ,

मरते दम तक बच्चा जब ना आए परदेश से,
पुतलियां दोनो अपनी चौखट पर छोड़ जाती है माँ,

प्यार कहते है किस और ममता क्या चीज है, ये तो,
उन बच्चों से पूछो जिनकी बचपन मे ही मर जाती है
माँ॥

मोना सिंह
आई.पी.जी. 2014

दास्तान–ए–मुस्तफा

प्यार हमारा था हम ही ने हारा था।
जिंदगी का वो खुबसूरत किनारा था।

दुनिया की आंखो से छुपता था।
अपनी ही आवाज से डरता था।

कहीं वो न कह दे।
दर्द को दर्द का अहसास न करा दे,

कई बार मोड़ा था मेरी भटकती राहों को।
कहीं प्यार से सराहा था मेरी निगाहों को,

मगर जब दिल ही चाहे निगाहें फेर लेना।
कोई भला क्यों करे दिल से वैर लेना,

तारूफ को रोग बना दिया।
ताल्लुक को बोझ बना दिया,

मुस्तफा को मुस्तफा से खौफ बना दिया।
मिट जांए तेरी यादों के निशां,
जिंदगी का खत्म हो कारवाँ।

हाथ हमारा था हमारा न रहा,
धरती का क्या करें जब साहिल ही न रहा।

आरजू ए मुस्तफा इतनी खुदा से,
तारूफ किसी का ताल्लुक बन जाए।

कभी किसी रोग या बोझ की बारिश न आये,
खुश रहें वो उन्हें खुशी मुबारक।

राह कांटों की हमें मुबारक।
कोई कांटा उनके दामन को न छूले।
बस इतनी सी बात मुस्तफा तेरा दम निकाले।

डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
उपाध्यक्ष, राजभाषा हिन्दी समिति

परिवर्तित

आज हर इतिहास झूठा हो गया है,
राम का वनवास झूठा हो गया है।
पाँव लोगो के पड़ते नहीं धरा पर,
ये वृहद आकाश झूठा हो गया है।

वन पक्षी हो गये है रीति रागी,
सत्यवत सन्यास झूठा हो गया है।
नारियां अब वस्त्र की हस्तक्षर है,
सत्य तुलसी दास झूठा हो गया है।

और आस्तीनों में पले साँपों के आगे,
मित्र का विश्वास झूठा हो गया है।

आदमी की पीठ पर एक युग लगा है,
उमर का आभास झूठा हो गया है।
सच तो ये है की जिंदगी की बावनी का,
एक पत्ता ताश झूठा हो गया है।

सोम्या त्रिपाठी
आई.पी.जी. 2014

जागरण

बर्फ की चट्टान से विश्वास का सौदा न कर,
तू किसी अंधे कुँए से प्यास का सौदा न कर।

कैकेयी के दो वचन पूरे हुए सच है मगर,
राजगढ़ से राम के वनवास का सौदा न कर।

पहले काँटों और फूलों के दलीलों को समझ,
तू अभी पतझड़ से मधुमास का सौदा न कर।

जिंदगी की उस पुरानी पैठ को हरगिज न भूल,
इस माये माहौल से इतिहास का सौदा न कर

– सोम्या त्रिपाठी
आई.पी.जी. 2014

दूधिया हाथ में

दूधिया हाथ में
चाँदनी रात में
बैठकर यूँ न मेंहदी रचाया करो।
और सुखाने के कर के बहाने से तुम
इस तरह चाँद को मत जलाया करो।

जब भी तनहाई में सोचता हूँ तुम्हें
सच महकने ये लगता है मेरा बदन
इसलिये गीत मेरे हैं खुशबु भरे
तालियों से गवाही ये देता सदन
भूल जाते हैं अपनी हँसी फूल सब
सामने उनके मत मुसकुराया करो।

सांझ कब ढल गयी कब सवेरा हुआ
रातभर बात जब मैंने की रूप से
मुझको जुलफों में अपनी छुपाते न अगर
बच न पाता जमाने की इस धूप से
लोग हाथों में लेके खड़े हैं नमक
जखम अपने न सबको दिखाया करो।

मेरा तन और मन हो गया है हरा
तुम मिले जब से धानी चुनर ओढ़कर
जिन किताबों के पन्नों को तुमने छुआ
आज तक उन सभी को रखा मोडकर
खत जो भेजे थे मैंने तुम्हारे लिये
मत पतंगे बना कर उड़ाया करो।

कवि डॉ. विष्णु सक्सेना
कवि सम्मेलन 2014

समिति के सदस्य

मार्गदर्शन
श्री वी. के. मोदी
प्रो. एस. जी. देशमुख

समन्वयक
डॉ. अजय कुमार
डॉ. मनोज पटवर्धन

संपादक
डॉ. अनुराग श्रीवास्तव

छात्र संपादक
अमनदीप सिंह
अर्पण जैन

रूपकार
दिवान्शु खंडेलवाल
अक्षय कुमार लोढ़ा

सहायक समिति
अक्षय गोयल
प्रज्वल गुप्ता
शुभम शुक्ला
जितेन्द्र दुबे

राजभाषा कार्यन्वयन समिति
प्रो. एस.जी. देशमुख
श्री संजय भटनागर
डॉ. अनुराग श्रीवास्तव
डॉ. जॉयदीप धर
डॉ. अजय कुमार
डॉ. मनोज पटवर्धन
डॉ. रितु तिवारी
श्री डीपी. सिंह
श्री जीतेन्द्र दुबे
श्री अनिल गर्ग
डॉ. एकता सकवार

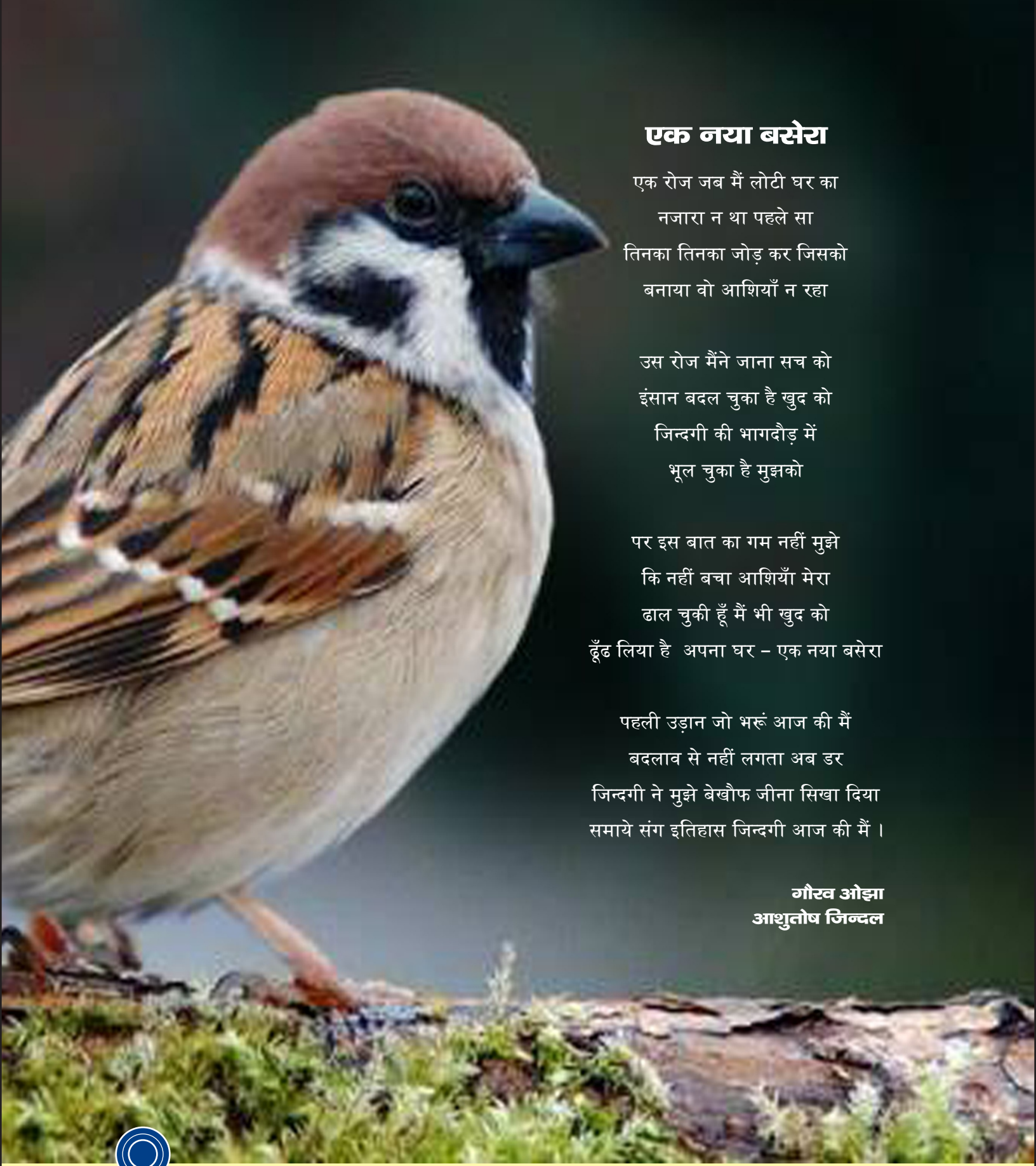

एक नया बसेरा

एक रोज जब मैं लोटी घर का
नजारा न था पहले सा
तिनका तिनका जोड़ कर जिसको
बनाया वो आशियाँ न रहा

उस रोज मैंने जाना सच को
इंसान बदल चुका है खुद को
जिन्दगी की भागदौड़ में
भूल चुका है मुझको

पर इस बात का गम नहीं मुझे
कि नहीं बचा आशियाँ मेरा
ढाल चुकी हूँ मैं भी खुद को
ढूँढ लिया है अपना घर – एक नया बसेरा

पहली उड़ान जो भरूं आज की मैं
बदलाव से नहीं लगता अब डर
जिन्दगी ने मुझे बेखौफ जीना सिखा दिया
समाये संग इतिहास जिन्दगी आज की मैं ।

गौरव ओझा
आशुतोष जिन्दल

विश्वजीवनामृतं ज्ञानम्

अटल बिहारी वाजपेयी
भारतीय सूचना प्रौद्योगिकी एंव प्रबंधन संस्थान ग्वालियर

मुरैना लिंक रोड़, ग्वालियर 474015 (मध्यप्रदेश) भारत